हिन्दी आवृति

चैतन्य लहरी

खण्ड XII मई-जून 2000 अंक 5 & 6

कई बार लोग मुझसे पूछते हैं कि हम क्या करें? ईसा-मसीह की तरह से "हमें भी ध्यान-धारणा करनी होगी। ध्यान-धारणा द्वारा ही हम अपनी चेतनावस्था में, अपने नए व्यक्तित्व में, शक्तिशाली व्यक्तित्व में उन्नत होंगे।" उन्नत होने का एकमात्र मार्ग ध्यान-धारणा (Meditation) है। तब आपको कोई हानि न पहुँचा सकेगा क्योंकि तब आप परमेश्वरी प्रेम की सुरक्षा में होंगे।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी
(ईस्टर पूजा - 1999)

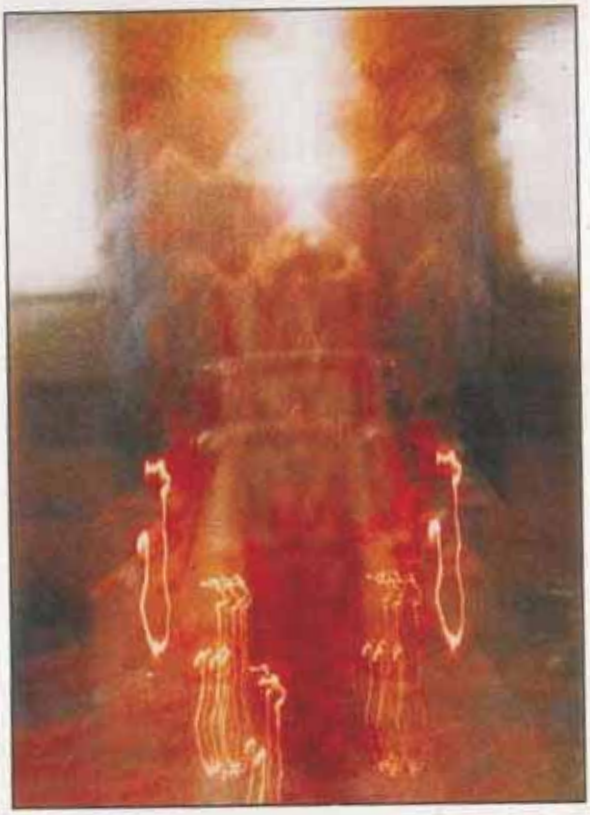

इस अंक में

1.	सम्पादकीय	3
2.	ईस्टर पूजा - इस्तम्बूल टर्की (25.4.99)	4
3.	77वां जन्मदिवस समारोह (विवरण)	15
4.	दिवाली पूजा (डेल्फी यूनान) (ग्रीस) (7.11.99)	18
5.	सत्य साधकों को किस प्रकार जन कार्यक्रम का सन्देश प्राप्त हुआ सर्वेक्षण (25 मार्च 2000)	29
6.	जन कार्यक्रम रामलीला मैदान (विवरण) (25.4.2000)	31
7.	श्री गणेश पूजा - 1987 - पुणे	32

सम्पादक : योगी महाजन

प्रकाशक : विजय नालगिरकर
162, मुनीरका विहार,
नई दिल्ली-110 067

मुद्रक : अभिनव प्रिन्ट्स, दिल्ली-34
फोन : 7184340

सम्पादकीय

गणपति पुले

महान कवि रविन्द्र नाथ टैगोर ने एक दिव्य स्वप्न देखा था कि भारत के तट पर सभी जातियों और रंगों के लोग माँ का अभिषेक करने के लिए एकत्र होंगे।

गणपति पुले का अन्तर्राष्ट्रीय सहज सम्मेलन उनकी भविष्यवाणियों को पूर्ण करता है। विश्व भर के भिन्न रंगों और जातियों के दस हजार से भी अधिक लोग श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देवी के चरण कमलों का अभिषेक करने के लिए नव सहस्राब्दि की पूर्व संध्या को गणपति पुले एकत्र हुए। परमेश्वरी माँ के चरण कमलों में हृदय-पुष्प अर्पण करने के लिए सभी हृदय खुल गए। करुणामयी माँ ने अपना प्रेम सभी हृदयों में उड़ेला और दस हजार पंखुड़ियाँ उनके प्रेम का एकमात्र कमल बन गई। आनन्दमय शान्ति हर व्यक्ति की आन्तरिक गहराइयों पर छा गई और उसे शान्त कर दिया। उस शाश्वत शान्ति में माँ आदिशक्ति के चरणों को धोने के लिए उमड़ती हुई समुद्र की लहरों की आवाज़ के सिवाय कुछ भी न बचा।

शक्ति साम्राज्ञी के सम्मुख अशान्त मस्तिष्क शान्त हो गए। उनके प्रेम की शक्ति सर्वत्र छा गई, उनमें प्रेम की लहरियाँ हमें उस अद्‌भुत तट पर ले गई जहाँ हम भूल गए कि हम कौन हैं, कहाँ से आए हैं और हमारे शारीरिक कष्ट क्या है?

हर रात्रि को स्वर्गीय दावत थी। जिसमें हमने स्वर्गीय संगीत की मधुर मदिरा का जी भर कर पान किया और उसकी गुँजन का आनन्द लेने के लिए अपने स्वप्नों में भी हम जाग उठे। हर सुबह प्रेम के एकनए उपहार का वचन लेकर आई। एक ऐसा प्रेम जो हमने पहले कभी न पाया था। ऐसा प्रेम जिसकी कोई सीमा न थी परन्तु जो हमारे लिए आनन्दमय आश्चर्य लेकर आया। हम लोग इतने आश्चर्य चकित और इतने आनन्दमग्न थे। इससे पूर्व हम कहाँ खोए रहे? परन्तु एक बार जब हमने स्वयं को पा लिया है तो कहीं ऐसा न हो, कि हम उन्हें खो दें।

हाँ, उन स्वर्गीय तटों से हम लौट आए हैं परन्तु माँ आदिशक्ति की सुगन्ध अभी भी हमारे हृदय में बसी हुई है। उन्हें हम अपनी पूजा वेदियों पर देखते हैं, अपने स्वप्नों में देखते हैं, अपने हृदय में देखते हैं। अबोध मुस्कान में उन्हें देखते हैं, एक दूसरे में भी हम उन्हें देखते हैं और जिस दिशा में भी हमारी गर्दन घूमे वहाँ हम केवल उन्हीं को देख पाएं।

ईस्टर पूजा
इस्तम्बूल टर्की (25.4.99)

(हमें अपनी ध्यान धारणा को स्थापित करना होगा।)

आज यहाँ हम सब टर्की में इस्तम्बुल में ईसामसीह के पुनरुत्थान का उत्सव मनाने के लिए एकत्र हुए हैं और उसी के साथ-साथ अपने पुनरुत्थान का उत्सव मनाने के लिए भी। ईसा-मसीह का पुनरुत्थान हमारे लिए एक महान सन्देश था। मृत्यु पर विजय पाकर मृत शरीर से जीवन्त शरीर धारण करके वे पुनर्जीवित हुए। शरीर तो वही था परन्तु एक मृत शरीर था और दूसरा जीवन्त। यह मात्र प्रतीकात्मक ही नहीं है। उनके साथ वास्तव में ऐसा घटित हुआ। आखिरकार वे दिव्यशिशु थे, वे एक दिव्य व्यक्ति थे। अत: वास्तव में उनके साथ यह घटना घटी। यह केवल प्रतीकात्मक बात नहीं है कि उनकी मृत्यु हुई और दूसरे जीवन्त शरीर को धारण करके उनका पुनरुत्थान हुआ था। आप कह सकते हैं एक जीवन्त व्यक्ति के रूप में उनके लिए मृत्यु का क्या अर्थ है? शाश्वत लोगों के लिए मृत्यु नहीं होती, अमर व्यक्ति की मृत्यु नहीं होती। हो सकता है कि कुछ समय के लिए लगे कि वह मर चुका है परन्तु वास्तव में वह मर नहीं सकता। ईसामसीह भी ऐसे ही थे अत्यन्त विशिष्ट अवतरण जो पृथ्वी पर मृत्योपरांत पुनर्जन्म लेने के लिए आए। हम लोग भी, जब तक हमें दिव्य रोशनी प्राप्त नहीं हुई, हम भी मृत प्राणी जैसे थे क्योंकि हमारी चेतना आप कह सकते हैं अत्यन्त मन्द एवं मृत है। हम फूलों को देख सकते हैं, चेहरे देख सकते हैं, इमारतें देख सकते हैं, शहर देख सकते हैं और बाकी सब चीज़ों को देख सकते हैं। ये सब चीज़ें हम देखते हैं और समझते हैं कि हम पूर्णत: जागृत हैं। परन्तु वास्तविकता ये नहीं है। **वास्तविक चेतना तो मस्तिष्क की सीमा को पार करने के बाद ही आती है, जब हम मस्तिष्क से ऊपर उठ जाते हैं, और यह ईसा-मसीह के पुनरुत्थान के कारण ही सम्भव हो पाया।**

वे इसलिए पुनर्जीवित हुए क्योंकि वे दिव्य अवतरण थे परन्तु हम इसलिए पुनर्जीवित हुए हैं क्योंकि हमें परमेश्वरी माँ का आशीर्वाद प्राप्त है। हमारा मस्तिष्क जो कि बीच में स्थित है श्री ईसा मसीह द्वारा नियंत्रित है। इसके दोनों भागों को वे आज्ञा चक्र के माध्यम से नियंत्रित करते हैं। आपके अहं या बन्धनों के माध्यम से वे मस्तिष्क का नियंत्रण करते हैं और आपमें सन्तुलन लाते हैं। आज्ञा चक्र में जब बहुत से विचार घूमने लगते हैं, कभी प्रतिक्रिया होने लगती है, कभी यह बन्धन स्वीकार करने लगता है, तब यह दास होता है। यह स्वतन्त्र नहीं है क्योंकि या तो यह अहं या आपके प्रति अहम् के प्रभाव में कार्य करता है। यह हमारे ज्ञान की मृत्यु है कि हम यह भी नहीं समझ सकते कि इससे परे जीवन का अस्तित्व है। इससे परे हम देख नहीं सकते। अब हमने यह बात जान ली है कि हम सब ऐसी स्थिति में है कि किसी के मर जाने पर हमें बुरा लगता है। हम चिन्तित होते हैं झगड़ा

करते हैं और सोचते हैं कि हमारे वर्तमान जीवन में कुछ कमी है। निश्चित रूप से कुछ ऐसा है जो हमें दास बनाता है, जिसके कारण से हम दास हैं। नि:सन्देह इस बात को हमने महसूस किया और सत्य की खोज करने लगे। बहुत सी विधियों से हम सत्य की खोज करने लगे और मैं जानती हूँ कि बहुत से साधक भटक गए और बहुत से अपना सन्तुलन खो बैठे और पतन के गर्त में गिर गए। परन्तु आपमें से बहुत से साधकों की रक्षा कर दी गई। ईसा-मसीह के पुनरुत्थान से उन्हें बचा लिया गया। उन्हें साहस करना पड़ा। यह कार्य उन्हें करना पड़ा और उन्होंने इसे कार्यान्वित किया। उनके बिना हमारी आज्ञा इतनी विनम्र न हो पाती। प्राचीन काल में मानव अत्यन्त वातानुकूलित था। और आज जब वह आधुनिक हो गया है तो अहं से भर गया है बीच की कोई बात नहीं। हम इन्हीं दो प्रभावों की जेल में है। पूरी तरह से मृत लोग हैं। किसी चीज़ के लिए हममें संवेदनशीलता नहीं है। मैंने देखा है और आज भी आप देख सकते हैं कि आस-पास क्या घटित हो रहा है। लोग एक दूसरे की हत्या करने को आतुर हैं। मानव, मानव का वध करना चाहता है। ऐसे मूर्खतापूर्ण कार्यों की क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि हम अपने सगे-सम्बन्धियों का ही वध करें। माता-पिता भी हत्या कर रहे हैं और बच्चे भी हत्या कर रहे हैं। सम्बन्ध कुछ रह ही नहीं गया है। यह तो ऐसे लोगों की निशानी है जिनमें बोध पूरी तरह से मर चुका हो। अपने ज्ञान की अवस्था में कम से कम हम में करुणा और प्रेम की भावना तो होनी ही चाहिए। परन्तु ये भावना भी समाप्त हो चुकी है। यह हम में विद्यमान नहीं है। पूरा विश्व जल रहा है। जिस प्रकार से युद्ध लड़े जा रहे हैं, जिस प्रकार से बच्चों की हत्या हो रही है, जिस प्रकार से लोग मानव को नष्ट कर रहे हैं, इनके विषय में आप पढ़ते हैं। यह दृष्टिकोण बिल्कुल गलत है कि वाद-विवाद से चीज़ों में सुधार होगा। ये धारणा बिल्कुल गलत है कि किसी को नष्ट करने से कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

सहजयोग में हमारा कार्य भली-भांति चल रहा है। यह बात मैं अवश्य कहूंगी परन्तु सहजयोग को मानव का विनाशकारी दृष्टिकोण, यह भयानक दृष्टिकोण रोकना होगा। अत: आप पूछ सकते हैं कि श्रीमाताजी आगे क्या करना है। इस विध्वंस को रोकने के लिए क्या किया जाए? इसका उत्तर ईसा मसीह की जीवनी में है। **आप लोगों को पुनर्जीवित करें, उन्हें पुनरुत्थान दें, उन्हें आत्मा का प्रकाश दें। एक ऐसी अवस्था तक उन्हें लाए जहाँ वे समझ सकें कि ठीक क्या है और गलत क्या है। लोगों को आपने करुणा एवं प्रेम का एहसास करने दें।** ऐसा जब होने लगता है तो हमारे अन्तर्निहित तीसरी शक्ति कार्यान्वित हो जाती है। हमारा अहं भी कम हो जाता है। हमारे बन्धन भी कम हो जाते हैं। उदाहरण के रूप में यदि हम सोचते हैं हम मुस्लिम हैं दूसरों को मारना हमारा अधिकार है, यदि हम सोचते हैं हम यहूदी हैं और दूसरों का वध करना हमारा अधिकार है। तो यह सारी भिन्नता, सभी प्रकार के भेदभाव जो हमारे अन्दर हैं ये मूर्खतापूर्ण हैं क्योंकि आप तो मानव हैं और वे भी मानव हैं। आप लोग मानव का वध कर रहे हैं। इसलिए नहीं कि उन्होंने कोई अपराध किया है या कोई गलत काम किया है। अपनी मूर्खतावश नि:सन्देह वे समझते हैं कि वे ये हैं वो वो। वो ऐसे नहीं हैं आप मात्र मानव है जैसा कि आप जानते हैं हर मानव में कुण्डलिनी का

निवास है। मानव में कोई अन्तर नहीं। आपमें से हरेक चाहे वो हिन्दू हो, मुस्लिम हो, यहूदी हो, इसाई हो, सिक्ख हो, पारसी हो या कुछ और। किसी भी नाम से चाहे आप इसे पुकारें। अब आप देखें कि किस प्रकार हम अपने लिए एक संज्ञा विशेष स्वीकार करते हैं। आप चाहे इसाई परिवार में उत्पन्न हुए हों या हिन्दू परिवार में, तुरन्त आप अपने धर्म के झण्डे को ऊँचा उठाए रखने के विषय में सोचते हैं। जिस धर्म में आप उत्पन्न हुए आपको न तो उसका ज्ञान था, न ही उसमें जन्म लेने के लिए आपने कहा, और न ही उसकी समझ आपको थी। तो किस प्रकार आप उस धर्म से सम्बन्धित हैं? आपमें कुण्डलिनी है, अन्य सभी लोगों में भी कुण्डलिनी है। अतः आप केवल मानव धर्म से सम्बन्धित हो सकते हैं। हर मानव में कुण्डलिनी विद्यमान है। इसलिए आप मानव के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। ये सब झूठे विचार कि हम हिन्दू हैं, हम मुसलमान हैं, हम इसाई हैं। सब मानव रचित हैं। कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि मानव किसी भी चीज़ का सृजन कर सकता है और लोगों के पास यह समझने के लिए बुद्धि नहीं है कि इन सब चीजों की रचना मानव ने की है।

उदाहरण के रूप में अमरीका के लोग बड़ी-बड़ी संस्थाएं और समाज बनाते हैं और वे सब पूर्ण असत्य पूर्ण गलत धारणाएं और पूर्णतः विध्वंसक शक्तियों पर आधारित होती हैं। फिर भी वे इन्हें बनाते हैं। इनके लिए उनके पास फार्म हैं, बड़े-बड़े समूह हैं, आदि आदि। और ये सब पनप रहे हैं। पर इसका अप्रत्यक्ष प्रभाव होता है। ये नहीं जानते कि यदि आप परमात्मा द्वारा सृजित मानव के विरूद्ध गलत चीजें करना आरम्भ कर देंगे, उस मानव के विरूद्ध जिसे कोई नष्ट नहीं कर सकता तो उसका अप्रत्यक्ष प्रभाव होगा। बहुत से देश जो किसी समय में शासक थे और जिन्हें बहुत महान माना जाता था उनका पतन हो गया है और बहुत से देश जो आज स्वयं को बहुत समृद्ध मानते हैं उनका पतन हो जाएगा। स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ मानने तथा यह सोचने कि उन्हें दूसरों का वध करने का अधिकार है के परिणाम स्वरूप इन सबका पतन होगा। तो अहिंसा का मत चलाया गया जो अपने आपमें अत्यन्त बेतुका है क्योंकि इसमें ये लोग मच्छरों और खटमलों की रक्षा करने लगे हैं। मनुष्यों का खून पीने वाले इन कीड़ों की वे रक्षा करते हैं! इससे क्या लाभ है? मनुष्य ऐसी बेतुके मूर्खतापूर्ण कार्य करने लगता है! मैं नहीं जानती कि कारण क्या है? जिस प्रकार वो चीज़ों को स्वीकार करते हैं वो अविश्वसनीय है। दासत्व की मानसिकता, मैं सोचती हूँ, उन्हें उचित अनुचित में भेद करने की स्वतन्त्रता नहीं देती। इस कार्य के लिए ईसा मसीह है। ईसा मसीह पूर्णतः स्वतन्त्र थे, सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों प्रलोभनों तथा मानवीय मूर्खताओं से मुक्त।

परन्तु आप कह सकते हैं कि श्रीमाताजी वे तो दिव्य पुरुष थे। वे दिव्य थे और अब आपको भी दिव्य बना दिया गया है। तो अब किस प्रकार सामूहिक होकर हम लोगों को बता सकते हैं "कि आप क्या कर रहे हैं? आप ऐसा क्यों कर रहे हैं? ऐसा करने की क्या आवश्यकता है? एक ओर तो मूर्खता के कारण सामूहिक विनाश है और दूसरी ओर आत्मघात। मदिरा तथा अन्य विध्वंसकारी चरित्रहीन चीजों को अपनाना। यह सब दुर्व्यसन सुगमता से उपलब्ध है और लोगों को बहुत पसन्द है। उन्हें अच्छा नहीं लगता जब आप उन्हें बताते हैं कि यह कार्य

विनाशकारी हैं। हम या तो अपने को नष्ट करते हैं या दूसरों को।

ईसा मसीह को अन्य लोगों ने क्रूसारोपित कर दिया परन्तु अपने आप वे पुनर्जीवित हुए। हम सब भी अब उसी स्थिति में हैं। मैं जानती हूँ कि सहजयोग को बहुत बार चुनौती दी गई। अब स्थिति पहले से बहुत अच्छी है उतनी बुरी नहीं। इसे चुनौतियाँ दी गई परन्तु अब चीजें शान्त हो रही हैं क्योंकि यही सत्य है और यही वास्तविकता है। दैवत्व भी यही है। अत: आपको घबराना नहीं चाहिए। सहजयोग के विषय में ये सब बेतुके विचार समाप्त हो जाएंगे। यह न केवल आप सबका परन्तु आपके आदर्शों का भी पुनर्जन्म है। आपके सिद्धान्त परिवर्तित होते हैं ताकि आपके चेतना ज्योतित हो सके। हमारा बोध प्रकाशमय होना चाहिए। अचानक सहजयोग के माध्यम से यह लोगों तक पहुँच गया है कि यदि आपमें प्रकाश नहीं है तो आप सही रास्ते पर कैसे जा सकते हैं? ईसामसीह के जीवन का वर्णन करना सुगम कार्य नहीं है कि वे किस प्रकार इसमें जीवित रहे। अत्यन्त युवा अवस्था में उनकी मृत्यु हो गई और कितनी क्रूरतापूर्वक उनका वध किया गया। परन्तु इसके बावजूद भी उन्होंने स्वयं को पुनर्जीवित किया। इन सब यातनाओं और अग्नि परीक्षा से वे बच निकले। हम लोगों को भी जब सहजयोग में समस्याएं होती हैं तो हमें समझना चाहिए कि हम में स्वयं को पुनर्जीवित करने की शक्ति है। कोई हमें नष्ट नहीं कर सकता, कोई हमें समाप्त नहीं कर सकता, क्योंकि हममें पुनर्जीवित होने की शक्ति है। पुनर्जीवित होने की यह जो शक्ति हमारे अन्दर है आप उसे समझें, महसूस करें और इस पर ध्यान-धारणा करें। यहाँ पर सभी देशों के लोग हैं। वो बताते हैं कि सरकार ऐसा कर रही है, सरकार वैसा कर रही है या उन्हें कुछ परेशानियाँ हैं या वे आपको एक पंथ कहते हैं। या कुछ और। ठीक है इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आपका कर्त्तव्य यह विश्वास करना है कि आप ईसा मसीह के पद-चिन्हों पर चल रहे हैं। कोई आपको नष्ट नहीं कर सकता। ईसा मसीह के जीवन का यही संदेश है कि दिव्य जीवन नष्ट नहीं किया जा सकता।

उनका शरीर ही जब नष्ट नहीं किया जा सका तो उनके दिव्य जीवन को किस प्रकार नष्ट किया जा सकता था? यहाँ पर बहुत से सहजयोगी हैं जिन्हें सहजयोग में आए बहुत समय हो गया है। उन्हें बहुत सी समस्याओं और कष्टों का सामना करना पड़ा। मैं मानती हूँ, परन्तु अब ये सब कष्ट शान्त हो गए हैं और आप लोग पुनरुत्थान की ऐसी अवस्था में हैं कि कुछ समय पश्चात्, आप हैरान होंगे, सहजयोग पूरे विश्व पर छा जाएगा। विश्व भर में लोग सहजयोग को अपनाएंगे और सर्वत्र इतने सहजयोगी होंगे कि हमारे सामने से मूर्ख धर्मान्धों की अल्प संख्या लुप्त हो जाएगी।

इसके लिए हमें क्या करना है? कई बार लोग मुझसे पूछते हैं कि हमें क्या करना है? आपने अवश्य बाइबल में पढ़ा होगा कि ईसा मसीह ने प्रार्थना की और वे निरन्तर प्रार्थना किया करते थे। **इसी प्रकार हम कह सकते हैं कि हमें ध्यान धारणा करनी है। ध्यान धारणा के माध्यम से हम अपने बोध, नव तथा सशक्त व्यक्तित्व में उन्नत होंगे। ध्यान-धारणा ही उन्नत होने का एकमात्र उपाय है, तब कोई आपको नष्ट नहीं कर सकेगा क्योंकि तब आप परम चैतन्य की सुरक्षा में होंगे।**

आपको इस बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि कौन आपको नष्ट करेगा? क्या घटित होगा? नि:सन्देह आरम्भ में थोड़ी सी उत्तेजना होती है। इसके विषय में लोगों को थोड़ी सी तकलीफ होती है, ये बात ठीक है। परन्तु वास्तव में लोग आपको नष्ट नहीं कर सकते, अपने अन्दर ये विश्वास बनाए रखें। ईसा मसीह की कोई संस्था नहीं है और न ही उन्हें आश्रय देने के लिए आदिशक्ति विद्यमान थीं, बिल्कुल नहीं। परन्तु अपने दिव्य व्यक्तित्व द्वारा उन्होंने सभी समस्याओं, यंत्रणाओं तथा उन पर किए गए सभी अत्याचारों से अपनी रक्षा की। अब आप लोगों को उनसे बेहतर सुविधाएं प्राप्त हैं क्योंकि आप लोग आत्मसाक्षात्कारी हैं, ज्योतित हैं। पहली बात तो ये है कि वे दिव्य पुरुष थे और सभी कष्टों को सह सकते थे। आप लोगों को इन कष्टों में से नहीं गुजरना होगा। आपको कोई सताएगा नहीं, कोई जेल नहीं भेजेगा और न ही कोई क्रूसारोपित करेगा। कोई भी कुछ नहीं कहेगा। यह संभव नहीं है परन्तु यदि आप अशान्त है, कभी-कभी आप अशान्त हो जाते हैं। मैं जानती हूँ। कुछ देशों में लोग यह सोच कर परेशान हो जाते हैं कि सहजयोग में होने के कारण उन्हें सताया जा रहा है। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि कोई भी ऐसा नहीं कर सकता। **आपको समझ लेना चाहिए कि हर समय आप सुरक्षा में होते हैं, आपके बड़े भाई के रूप में ईसा-मसीह आपके साथ हैं मैंने सदैव ये बात कही है। आपके साथ आपकी माँ (श्री माताजी) भी हैं और सभी गण तथा देवदूत आपके इर्द-गिर्द विद्यमान हैं।** यह सब जब मैं देखती हूँ तो सोचती हूँ कि यह सब कितना अद्वितीय है। सभी देशों में गण और देवदूत प्रकट हुए हैं। आपको इतनी पावन सुरक्षा प्राप्त है। अत: मार्ग में आने वाली बाधाओं तथा अपने विनाश आदिके विषय में चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। दुष्टों को नष्ट करने के लिए एक प्रकार की विध्वंसक शक्ति कार्यरत है।

ईसा मसीह के जीवन से हमें जान लेना चाहिए कि आत्म-साक्षात्कारी व्यक्ति को, इस आधुनिक युग में कोई नष्ट नहीं कर सकता, आज तक किसी सहजयोगी को कोई नष्ट नहीं कर सका। प्राचीन काल में बहुत से सन्तों का वध किया गया, उन्हें यातनाएं दी गईं। परन्तु आज भी वे कविता के रूप में जीवित हैं। अपने आशीष के रूप में भी वे सर्वत्र विद्यमान हैं। वे समाप्त नहीं हुए। उनकी मृत्यु भी नहीं हुई। यद्यपि ऐसा प्रतीत होता है कि अब वो जीवित नहीं हैं परन्तु उनका नाम लेने और आह्वान करने मात्र से चीजें कार्यान्वित हो जाती हैं। आत्मा रूप में वे विद्यमान हैं और आपकी सहायता करते हैं। ईसा मसीह के जीवन से विश्वस्त होकर, उनके पुनरुत्थान से हमारा पुनर्जन्म हुआ है। हमारा शरीर भी, निश्चित रूप से, परिवर्तित हो गया है। पुनर्जन्म लेने के पश्चात्, आप जानते हैं, कि आपके चक्र, रोगों से मुक्ति और आशीर्वाद प्रदान करने लगते हैं। हमारा दृष्टिकोण, हमारा मानसिक दृष्टिकोण, परिवर्तित हो जाता है और अहं भी लुप्त हो जाता है। केवल इतना ही नहीं हमारे बन्धन भी समाप्त हो जाते हैं। मैं अत्यन्त प्रसन्न थी कि ये लोग जो एक धर्म विशेष में उत्पन्न हुए हैं तुरन्त देख लेते हैं कि उस धर्म में क्या कमियाँ हैं, मानो गर्दन घुमाकर वे अपने समाज का रूप देख लेते हों और समझ जाते हों कि उनमें क्या कमियाँ हैं, और जब वे इन कमियों पर ध्यान करने लगते हैं तो सब ठीक हो

जाता है। समाज सुधर रहे हैं। आप देखते हैं कि तथाकथित धार्मिक विचार अपने ही शिकंजे में फँस रहे हैं और इन सब का पतन हो जाएगा क्योंकि ये असत्य हैं। यह सच्चा धर्म नहीं है। **धर्म तो हमारे अन्तः स्थित है और यही पावन धर्म, विश्व धर्म है।** समाधान इस प्रकार आता है कि मान लो युद्ध हो रहे हैं-धर्म के नाम पर युद्ध, परमात्मा और धर्म के नाम पर लोग युद्ध करते हैं तो क्या होता है? **इस प्रकार लड़े जाने वाले युद्ध सच्चाई को नष्ट नहीं कर सकते, वास्तविकता को नष्ट नहीं कर सकते। ईसा मसीह के पुनरुत्थान का यह एक अन्य सन्देश है।** आप ऐसा नहीं कर सकते। आप सोच सकते हैं कि आपने कुछ लोगों का वध कर दिया परन्तु वे तो अब भी जीवित हैं। सभी सन्त सभी महापुरुष जो जीवन में पुनर्जीवित हुए, अमर हैं। उनकी सुरक्षा सदैव विद्यमान है। उनका पथ-प्रदर्शन बना रहता है। एक प्रकार से आप देख सकते हैं कि वे यहाँ विद्यमान हैं।

अतः व्यक्ति को किसी प्रकार का भय नहीं होना चाहिए। मृत्यु का भय दूर हो जाना चाहिए। उनमें से बहुत से लोगों ने यही बात कही कि आखिरकार मृत्यु है क्या? आप जब पुनर्जीवित होते हैं तो मृत्यु की मृत्यु हो जाती है। अतः व्यक्ति को मृत्यु का भय नहीं होना चाहिए। पुनर्जन्म लेने से पूर्व आपमें से कितने हीं लोग मृत्यु से भयभीत होते थे परन्तु अब ऐसा नहीं है। आपको कोई चिन्ता नहीं है कि मृत्यु कब आएगी? क्या होगा? या किस प्रकार से आपको नष्ट किया जाएगा? आप जानते हैं कि आपको नष्ट नहीं किया जा सकता। अपने हृदय में आप भली-भांति जानते हैं कि आपको नष्ट नहीं किया जा सकता। निःसन्देह अपनी मृत्यु का भय हमारे हृदय से चला जाता है। परन्तु एक चीज बच जाती है, वह है करुणा। जब आप सभी बुराइयों को होते हुए, यन्त्रणा भोगते हुए लोगों को देखते हैं तो आपका मस्तिष्क इसे स्वीकार नहीं कर पाता। इनके प्रति संवेदन शील होकर उनके दर्द को आप महसूस करते हैं। आश्चर्यजनक! परन्तु इसके परिणाम स्वरूप आपकी इच्छाशक्ति उनके विषय में आपकी सोच, आपके अश्रुओं में भी शक्ति होती है जो अकारण कष्ट उठा रहे लोगों को सांत्वना देती है। इसे आपको परखना होगा। अपने अन्दर प्रेम और करुणा के भाव उत्पन्न करें, चीजों में सुधार होगा। अब भी आप ध्यान धारणा करते हैं परन्तु इतने प्रेम एवं करुणापूर्वक ध्यान धारणा करें कि आपकी आँखों से बहने वाले आँसुओं का सुप्रभाव इन मूर्ख तथा क्रूर लोगों पर पड़े जो एक दूसरे का वध करने में लगे हुए हैं। परन्तु यह जान लेना आपके लिए अत्यन्त आवश्यक है। आप व्यक्ति मात्र नहीं हैं, आप सार्वभौमिक व्यक्तित्व बन गए हैं। आप मात्र व्यक्ति नहीं रहे। आप सार्वभौमिक व्यक्तित्व हैं और अपने स्थान पर बैठ कर पूरे विश्व की समस्याओं का समाधान कर रहे हैं। अब आप तुच्छ मानव नहीं जो केवल अपने बच्चों, परिवार आदि के विषय में ही चिन्तित रहता है। आपका मस्तिष्क विस्तृत हो चुका है, इस प्रकार से विस्तृत हो चुका है कि विश्व की सभी समस्याओं के लिए यह स्वतः कार्य करता है।

महिलाएं आमतौर पर समाचार पत्र नहीं पढ़तीं। वे सोचती हैं कि समाचार पत्र पढ़ना मूर्खता है। परन्तु महिला होते हुए भी मैं समाचार पत्र पढ़ती हूँ। विशेष रूप से वे समाचार जिन्हें मेरे चित्त की आवश्यकता है। मैंने देखा है कि यह कार्य करता है। **आप सब लोग मिलकर**

जब समझ जाएंगे कि विध्वंसकारी शक्तियों को सुधारना, उन्हें ठीक करना आपकी जिम्मेदारी है तो बहुत अच्छा होगा। जिन-जिन मामलों में भी बड़ी समस्याएं होंगी उन पर आपने केवल सामूहिक रूप से ध्यान करना है। समस्या मुख्यत: धर्मों के कारण है यदि सभी धर्मों के लोग एक नए धर्म, विश्व धर्म को अपना लें तो वो एक हो जाएंगे। एक ही धर्म होने के कारण तब ये परस्पर लड़ नहीं सकते। परन्तु वे एक धर्म नहीं चाहते क्योंकि वे लड़ना चाहते हैं, लड़ाकू मुर्गों की तरह। वे यदि सहज में आ जाएं ज्योतित हो जाएं तभी वे एक दूसरे के प्रेम का आनन्द ले सकेंगे। एक दूसरे की हत्या और विध्वंस का नहीं। यही बात हमने ईसा-मसीह के जीवन से सीखनी है। ईसा-मसीह अकेले थे, बिल्कुल अकेले। उनके साथ सामूहिकता न थी, फिर भी वे कितने शक्तिशाली थे कि उन्होंने मृत्यु से युद्ध किया और आज्ञा के स्तर पर इससे साफ बच निकले। उनके बिना हम सहजयोग कार्यान्वित न कर पाते। उन्होंने यदि अपना जीवन बलिदान न किया होता तो कुण्डलिनी ऊपर को न जा पाती। परन्तु उन्होंने बिना आना-कानी के आत्म-बलिदान कर दिया। अपने जीवन को बलिदान करने का कार्य स्वीकार करके और फिर स्वयं को पुनर्जीवित किया। आज्ञा चक्र के संकुचित मार्ग से वे गुजरे ताकि आप लोग केवल इतना कहकर ठीक हो सको कि "मैं सबको क्षमा करता हूँ।" क्षमा का गुण जब इतना शक्तिशाली है कि आप इसके माध्यम से मृत्यु से भी लड़ सकते हैं तो क्यों न क्षमा कर दी जाए? बहुत से लोग कहते हैं कि श्रीमाताजी हम क्षमा नहीं कर सकते। मैंने उन्हें सौ बार बताया है कि क्षमा न करके भी तुम क्या कर रहे हो। तो ईसा-मसीह के जीवन का सन्देश ये है कि उन्होंने क्षमा किया। उन सब लोगों को क्षमा किया जिन्होंने उन्हें सताया। क्रूसारोपित करने वाले लोगों के लिए भी उन्होंने कहा,"हे, परमात्मा कृपा करके इन लोगों को क्षमा कर दें क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।" सूली पर चढ़कर भी उन्होंने ये बात कही, जब सताया जा रहा था, अपमानित किया जा रहा था। उन्होंने कहा इन्हें क्षमा कर दो, इन पर दया करो, इनसे सहानुभूति करो क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं। ये परमात्मा के पुत्र का वध कर रहे हैं, इनका क्या होगा? ये कहाँ जाएंगे? इनका क्या हाल होगा? हमारे लिए ये बहुत बड़ा सन्देश है कि सूली पर भी उन्होंने क्षमा करने के लिए कहा 'हे परमात्मा, हे परमपिता इन सबको क्षमा कर दो।' इसी प्रकार हमें भी लोगों को क्षमा करना चाहिए। ईसा-मसीह के जीवन से यह बात स्पष्ट होती है कि क्षमा करना बहुत महत्वपूर्ण है। विश्व के लिए क्षमा का ये महत्व समझना महत्वपूर्णतम है। क्षमा तो आपको करनी ही चाहिए। क्षमा करना यदि हम सीख लें तो आप हैरान होंगे, संसार में लड़े जाने वाले आधे युद्ध समाप्त हो जाएंगे। कोई घटना आज से हजारों वर्ष पूर्व हुई थी, परन्तु आज भी लोग उससे भयभीत हैं। अब भी लोग उसको लेकर लड़े जा रहे हैं, सोचते हैं कि बहुत वर्ष पूर्व ऐसा हुआ था इसका परिणाम युद्ध है। यदि हम उन लोगों को क्षमा कर सकें जो हमारे जन्म से भी पहले हुए तो ऐसे लोगों के समूह क्यों बनाए? क्यों? क्योंकि मानव में घृणा नाम का भी एक अवगुण है। लोगों के हृदय में घृणा है। इसके लिए घृणा उसके लिए घृणा। छोटी-छोटी चीजों के लिए कहते हैं मुझे ये पसन्द नहीं है, ये

पसन्द है। आजकल विशेष रूप से यह आम बात है। जब हम युवा थे तो हमें ऐसी बातें कहने की आज्ञा न थी। मुझे ये पसन्द नहीं है, मुझे ये पसन्द है, हम नहीं कह सकते थे। परन्तु आजकल युवाओं को ऐसा कहने की स्वतन्त्रता है। मुझे वो लोग पसन्द नहीं है। मुझे वो व्यक्ति अच्छा नहीं लगता। आप कौन हैं? दूसरों के मामलों का निर्णय करने वाले आप कौन हैं? आपको महत्व समझना नहीं आता। आप ये नहीं जानते कि आनन्द किस प्रकार लेना है। आप केवल इतना कहना चाहते हैं कि मुझे पसन्द नहीं है और यदि आपको पसन्द होता तो आप क्या करते। आपको पसन्द हो या न हो एक ही बात है। अपने अहं का प्रदर्शन करने के लिए आप ऐसा कहते हैं क्योंकि आपमें प्रेम का पूर्ण अभाव है। आपमें यदि प्रेम होता तो आप सभी चीजों का आनन्द उठा पाते। हमें कभी नहीं कहना चाहिए कि मुझे पसन्द है मुझे पसन्द नहीं है। आप यदि वास्तव में ये कहें कि मुझे आनन्द आता है तो आपको सभी चीजों का आनन्द आएगा।

ये कहकर कि मुझे ये पसन्द नहीं आप स्वयं को सीमित कर रहे हैं। आप न तो कोई जज हैं न कमांडर और न कोई महान व्यक्ति कि आप ये कहें। हैरानी की बात है कि पश्चिमी देशों में ऐसा कहने का बहुत अधिक प्रचलन है। नि:सन्देह पूर्व में, भारत में, यदि कोई ऐसा कहे तो लोग उसके मुँह पर कहेंगे कि वह बन रहा है। परन्तु दिखावा करना भी बुरी बात नहीं मानी जाती। पश्चिम में इसे भी बुरा नहीं समझा जाता। किसी चीज के बारे में संकोच करना वहाँ पर अभद्रता समझी जाती है। परन्तु शेखी बघारने को बुरा नहीं समझा जाता।

क्या ईसा मसीह ने किसी बात की शेखी बघारी थी? नहीं, कभी नहीं उन्होंने कभी डींग नहीं हाँकी। जब उन्होंने देखा कि पावन स्थलों पर लोग वस्तुएँ बेच रहे हैं तो आप जानते हैं कि उन्होंने क्या किया? उन्होंने कोड़ों से उनकी पिटाई की क्योंकि वे गलत कार्य कर रहे थे। स्थल की पावनता को दूषित कर रहे थे। उन्होंने ऐसा क्यों नहीं कहा कि "मुझे ये पसन्द नहीं है?" मंदिर या पावन स्थल पर ऐसी चीज़ों की बिक्री के लिए उन्होंने स्पष्ट रूप से अपनी अस्वीकृति प्रकट की। लोग वहाँ पर पूजा करने जाते हैं। उन्हें धन लोलुपता विहीन मस्तिष्क की आवश्यकता होती है। जहाँ आपने ध्यान करना होता है वहाँ पर धन लोलुपता का कोई कारण नहीं होना चाहिए। आज यह सबसे बड़ी समस्या है। हर चीज का लक्ष्य धन है। आपको महंगी कारें पसन्द हैं और आप इसे पाना चाहते हैं किसी भी प्रकार से आप कार लाएंगे और इसमें बैठेंगे चाहे आप चोर हों फिर भी दिखावा करने के लिए आप महंगी कार खरीदेंगे। संभवत: क्योंकि आप चोर हैं, अपनी असलियत को छिपाने के लिए आप ऐसा करना चाहते हैं। तो सत्यमय जीवन का अभाव है। जीवन मात्र दिखावा बन गया है और आप लोग अपने को बहुत श्रेष्ठ समझते हैं। परन्तु जब मौत सामने आएगी तो आप क्या करोगे? उस वक्त आप काँप उठेंगे अपनी सारी उपलब्धियों, सारे दिखावों के बावजूद भी मृत्यु के सम्मुख लड़खड़ा जाएंगे। परन्तु एक सहजयोगी ऐसा नहीं कर सकता वह जानता है कि मृत्यु को आना है तो आना ही है। मृत्यु को भयानक मानकर वह काँपेगा नहीं। मृत्यु को विश्राम का स्थान मानेगा। उसे कुछ भी बुरा नहीं लगेगा क्योंकि वह तो मृत्यु से ऊपर है, विनाश से परे है। तो जो कुछ भी उसके जीवन में घटित

होगा उसका बुरा माने बिना वह उसे सहज ही में स्वीकार कर लेगा।

हमारे सामने कबीर साहब का उदाहरण है। कबीर ने बहुत सी कविताएं लिखीं उनमें से अधिकतर मौत के विषय में हैं। उन्होंने कहा कि मौत जब आई तो एक शब्द भी नहीं बोली। मैंने उससे लड़ाई नहीं की, केवल इतना किया कि अपने ऊपर चादर ओढ़कर गहरी नींद सो गया। कितनी मधुरतापूर्वक उन्होंने मृत्यु का वर्णन किया है। कबीर कभी-कभी तो मुझे ईसा-मसीह का स्मरण कराते हैं। ईसा मसीह ने भी इन सब चीज़ों को कितने धैर्यपूर्वक सहन किया और जब उनकी मृत्यु हुई तो सारे पंचभूत डोल गए। वे पंचभूतों के स्वामी थे, पंचभूत डोल गए, भूचाल आ गए और प्राकृतिक विपदाएं आईं। उन्होंने उनकी मृत्यु को महसूस किया स्वयं ईसा मसीह ने नहीं, उन्हें लगा कि इतनी महान शक्ति जो कि मानव अस्तित्व का सार तत्व थी, इस प्रकार नष्ट कर दी गई। वे नहीं जानते थे कि ईसा-मसीह पुनर्जीवित हो उठेंगे, इसका उन्हें ज्ञान न था परन्तु वे इससे बाहर आए, उस मृत्यु से पुनर्जीवित हुए जिसके विषय में सबको आघात लगा था।

उनकी मृत्यु हमें शक्ति प्रदान करती है। हमारी मृत्यु नहीं है, हम पुनर्जन्म ले चुके हैं और पुनर्जीवन हमारे साथ है परन्तु हमें इसमें स्थापित होना है। अपने सहजयोग को हमें स्थापित करना है, अपनी ध्यान धारणा को हमें स्थापित करना है यही महत्वपूर्ण चीज़ है। उस दिन मैं एक महिला से मिली। उसने मुझे अपने जीवन में घटे बहुत से चमत्कारों के विषय में बताया, किस प्रकार उसकी रक्षा की गई थी। एक दुर्घटना में वह मरने ही वाली थी। परन्तु किसी प्रकार उसे बचा लिया गया। परन्तु उसके पति ने उसके सम्मुख दम तोड़ दिया। मैंने कहा," आपका क्या अभिप्राय है? यह सब कैसे घटित हुआ। उसने उत्तर दिया," श्रीमाताजी यह श्रद्धा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।" श्रद्धा अर्थात् समर्पण। समर्पण क्योंकि मैं समर्पित हूँ मैंने पूछा कैसे? यह तो मैं नहीं जानती। मैं तो बस समर्पित हूँ। जब मुझे पता चलता है कि मैं समर्पित हूँ तो मुझे बहुत ही सुख मिलता है। मैं बहुत ही जीवन्त होती हूँ, और बहुत ही निडर। अपनी आत्मा के प्रति मैं पूरी तरह से समर्पित हूँ। ध्यान-धारणा करते हुए हमें यही सब सीखना है कि हमें समर्पित होना है।

मोहम्मद साहब ने इसे इस्लाम नाम दिया। इस्लाम अर्थात समर्पण। चाहे वे लोग समर्पित नहीं होते परन्तु उन्होंने कहा कि आपको अपनी सार्वभौमिक प्रकृति, अपनी श्रेष्ठ प्रकृति के प्रति समर्पित होना है। आपको समाप्त नहीं हो जाना और न ही इन सांसारिक तूफानों तथा सांसारिक वस्तुओं में फँस जाना है। ईसा मसीह का मिसाल अत्यन्त शक्तिप्रदायक है और वे हमारे साथ हैं वे सदैव हमारा पथ-प्रदर्शन करेंगे। सदैव हमारी देखभाल करेंगे। केवल इतना ही नहीं वे हमें शक्ति भी प्रदान करेंगे। शाश्वत जीवन के विरुद्ध जाने वाले लोगों को वे नष्ट भी करेंगे। सभी बेहूदी चीज़ों को वे समाप्त कर देंगे और अब आप देख रहे हैं कि इस कलियुग में धर्म के नाम पर लड़ने वाली सभी संस्थाएं नष्ट हो रही हैं। स्वतः, हमने इसके लिए कुछ भी नहीं किया। अपने आप अपनी कारस्तानियों की वजह से ये सब समाप्त हो रही हैं क्योंकि इनमें सच्चाई नहीं है। उनमें आत्मा का पूर्ण अभाव है और आत्मा के बिना क्या रह जाता है केवल मृत शरीर। सहजयोगियों को ये सारी सूझ-बूझ होनी

चाहिए कि हमें आत्माभिमुख होना चाहिए, धनाभिमुख नहीं, शरीराभिमुख नहीं, भावनाओं का कायल नहीं केवल आत्मा। यह अत्यन्त आनन्ददायक स्थिति है। इसे पाकर आपको बहुत हैरानी होगी। आप अत्यन्त प्रसन्न, प्रेममय, सुन्दर व्यक्ति बन जाएंगे। आस-पास के लोग तुरन्त ये जान जाएंगे कि इस व्यक्ति में कुछ है। इस महिला में कोई चमक है, इनमें कुछ विशेष बात तो अवश्य है कि ये पुरुष या महिला हम सबसे भिन्न है। इसे तुरन्त पहचाना जा सकता है। ईसा मसीह के समय में बहुत कम लोग उन्हें पहचान पाए क्योंकि वो लोग आत्मसाक्षात्कारी न थे। क्योंकि वे लोग मानव स्तर से बहुत नीचे थे। परन्तु आप लोगों के साथ ऐसा नहीं है आप लोगों को इसका भली भांति ज्ञान है। आपका जन्म आधुनिक समय में हुआ है। आज ईसा मसीह के विषय में सोचते हुए हमें समझना चाहिए कि उनका जीवन कैसा था? उनका व्यक्तित्व कितना शानदार था। कितने कष्टों में उन्हें डाला गया? वे इतने शक्तिशाली थे कि उन्होंने उन लोगों को तुरन्त समाप्त कर दिया होता वे इतने शक्तिशाली थे; इतना शक्तिशाली व्यक्तित्व था उनका। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया, उन्होंने सबको क्षमा कर दिया और इस प्रकार आपको क्षमा का सन्देश दिया महानतम शक्ति का जो सभी कुछ कार्यान्वित कर सकती है। अब आप भी क्षमा के इस विचार के प्रति समर्पित हो जाएं और वास्तव में क्षमा करने का प्रयत्न करें। आप हैरान होंगे कि आप अत्यन्त शान्त हो जाएंगे और प्रसन्नता का अनुभव करेंगे और जिन लोगों ने आपको सताया है उनका पतन हो जाएगा। अब हमें जो कार्य करना है वो है लोगों को परिवर्तित करना यह हमारा कार्य है। हमें लोगों को परिवर्तित करना है। हम परिवर्तित हो चुके हैं, एक बिन्दु तक पहुँच गए हैं और कह सकते हैं कि हमारा पुनरुत्थान हो चुका है। हमें पूरे विश्व का पुनरुत्थान करना है। यह हमारा कार्य है। ये सब झगड़े, लड़ाईयाँ झूठ आदि समाप्त हो जाएंगे।

हमारे लिए ईसा-मसीह हमारे पथ-प्रदर्शक हैं। उन्होंने यह सब कार्य हमारे हित के लिए किया। सर्वसाधारण व्यक्ति के रूप में वे अवतरित हुए। सर्वसाधारण व्यक्ति के रूप में जीवन व्यतीत किया। यद्यपि उनमें बहुत सी शक्तियां थीं परन्तु उन्होंने इन शक्तियों का उपयोग किसी को नष्ट करने के लिए नहीं किया। इसी प्रकार हम भी प्रेम एवं स्नेह के साथ मृत्यु के साथ छुटकारा पा सकते हैं, अपनी गलतफहमियों से छुटकारा पा सकते हैं। अपने विनाशकारी स्वभाव से मुक्त हो सकते हैं। यह विध्वंसकारी स्वभाव सहजयोगियों के लिए अत्यन्त भयानक है। हमें केवल यही आशा है कि सहजयोगी पुनरुत्थान को पा लेंगे। मैं केवल इतना जानती हूँ कि यदि बहुत से लोग सहजयोगी बन जाएं तो ये विश्व परिवर्तित हो जाएगा। इस विश्व को परिवर्तित होना होगा परन्तु आपका उत्थान होता रहना चाहिए। अपने उत्थान पथ पर आप बढ़ते चले जाइए, इससे वापिस मत लौटिए।

यहाँ-वहां छोटी-छोटी चीज़ों की चिन्ता मत करिए। आपकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है और यह जिम्मेदारी है मानव मात्र को परिवर्तित करने की। ये आपका कर्त्तव्य है। आपने कितने लोगों को परिवर्तित किया, कितने लोगों को बदल दिया। पुरुष और महिलाओं दोनों पर ये बात लागू होती है। आपको अन्य लोगों में परिवर्तन लाना है। ये आपका कार्य है और इसके

लिए शक्ति आपने ईसा मसीह से प्राप्त की है कि आप अन्य लोगों को परिवर्तित करें। आनन्द और प्रसन्नता के नए विश्व में उन्हें परिवर्तित करके ले आएं। सहज निर्मल धर्म में उन्हें ले आएं। वास्तव में यदि ऐसा हो जाए तो विश्व के विषय में सोचें, हमारे लिए ये कितना सुन्दर संसार हो जाएगा! **हर सहजयोगी का कर्त्तव्य है कि इस नए साहसपूर्ण कार्य को करे और ये खोजने का प्रयत्न करे कि वह कितने लोगों को परिवर्तित कर सकता है और कितने लोगों को सच्चे मार्ग पर ला सकता है।** मुझे आशा है कि अगली बार जब हम यहाँ मिलेंगे तो इन आठ मेजबान देशों के यहाँ उपस्थित लोगों से दुगुनी संख्या में सहजयोगी उपस्थित होंगे।

आप सबको मेरा हार्दिक प्रेम। महान दिन हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। अब हमें केवल अपनी जिम्मेवारी को समझना है। मुख्य चीज ये है कि कितने लोगों को हमने परिवर्तित किया। कितने लोगों को हमने पुनर्जीवन दिया। इस चीज का लेखा जोखा रखा जाना चाहिए। इसका नहीं कि हमने कितनी पूजाओं में भाग लिया। पूजाओं में भाग लेना उतना महत्वपूर्ण नहीं है। पूजाएं केवल आपको शक्ति प्रदान करने के लिए होती हैं परन्तु ये आपका कार्य नहीं है, आपका कार्य नहीं है। अपने कार्य के लिए आप पूजाओं से सारी आवश्यक शक्ति ले सकते हैं परन्तु यदि आप इस शक्ति का उपयोग नहीं करते हैं तो इसका क्या लाभ? तो मैं अब ये बात आप पर छोड़ती हूं कि आपको स्मरण रहे कि आप पुनरुत्थान को पा चुके हैं। और अब आपने अन्य लोगों को पुनरुत्थान प्रदान करना है। पूर्ण उथल-पुथल और विध्वंस के इस समय में यही महत्वपूर्णतम कार्य है।

परमात्मा आपको धन्य करें।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का

77वां जन्मदिवस समारोह

निर्मल धाम-दिल्ली 21-3-2000

एक विवरण

यमुना नदी के किनारे पर बसी भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली लगभग डेढ़ करोड़ की आबादी वाला महानगर है। यहां के लोगों की प्रतिव्यक्ति आय बाकी देशों के लोगों की औसत आय से लगभग दुगुनी है। 21 मार्च 2000 को परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर विश्व भर से आए हुए उनके सहजी बच्चों के आनन्दोल्लास का पूरा महानगर साक्षी था। यूरोप, उत्तरी अमरिका, लैटिन अमरीका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, पूर्वी-एशिया और रूस से आए 725 सहजयोगियों ने, दिल्ली और भारत के अन्य राज्यों से आए 2500 सहजयोगियों के साथ छावला गाँव स्थित निर्मल धाम अपनी परम-पावनी माँ के जन्म दिवस के उत्सव को इन्द्रधनुषी रंगों से सजा दिया। संयुक्त राज्य अमरीका के उप राष्ट्रपति, भिन्न राज्यों के राज्यपालों, वहां के दस नगरों के महापौरों, कनाडा के प्रधानमंत्री तथा कनाडा और आस्ट्रेलिया के सांसदों, रूस के चिकित्सक संघ के अध्यक्ष, कनाडा के दस मुख्य नगरों के महापौर तथा आइवरी कोस्ट के राष्ट्रपति ने श्रीमाताजी को इस शुभ अवसर पर बधाई सन्देश भेजे, जिनमें उन्होंने मानव हृदय परिवर्तन द्वारा समाज परिवर्तन में उनके योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की। न्यूयार्क राज्य सभा ने शान्ति, स्वास्थ्य तथा 80 देशों का हित सहजयोग ध्यान धारणा द्वारा करने के लिए दो बार विश्व शान्ति पुरस्कार के लिए मनोनीत की गई श्री माताजी के सम्मान में एक विशेष प्रस्ताव पारित किया। इसमें कहा गया था कि श्रीमाताजी ने नव सहस्राब्दि को एक उपयुक्त वातावरण बनाने के लिए नव दृष्टि प्रदान की है और इस वातावरण में भिन्न क्षेत्रों और जातियों के लोग अपने भेदभाव त्याग कर शान्ति से रह सकेंगे। उत्सव कार्यक्रम के संयोजक दिल्ली के श्री वी.जे. नालगिरकर ने भिन्न देशों की विधानसभाओं, सूफी सन्तों आदि के बधाई सन्देश संक्षिप्त में पढ़कर सुनाए।

इस अवसर पर बोलते हुए पूर्व लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ ने कहा कि

"सभी संस्थाओं को दृढ़ विश्वास है कि सत्ता की भूख ही मानव का पथ प्रदर्शन करती है तथा मनुष्य परस्पर प्रेम नहीं कर सकते। परन्तु सहजयोगियों की सामूहिकता में विशिष्ट लोग हैं जिन्हें आत्मा का ज्ञान प्राप्त हो गया है और वे आन्तरिक रूप से समृद्ध हैं और समर्थ हैं तथा उन्हें पूर्ण सत्य का बोध है। वे जानते हैं कि समाज में प्रचलित कुसिद्धान्तों को असत्य साबित करके किस प्रकार परस्पर प्रेम बाँटना है और किस प्रकार अधम प्रवृत्तियों पर काबू पाना है।"

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी
21 मार्च 2000

विश्व भर में सहजयोग फैल जाने से वास्तविक सार्वभौमिक गाँव (True Global Village) का सृजन होगा और उन्होंने कामना की कि जब तक ये लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लिया जाता तब तक परम पूज्य श्रीमाताजी इसी प्रकार अपने जन्मोत्सव मनाती रहें। कश्मीर में अपने कठिन लक्ष्य में सफलता प्राप्त करने के लिए श्री माताजी का आशीर्वाद लेना वे न भूले।

गृहमन्त्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी ने अपने भाषण में कहा कि निर्मल धाम आने में उनकी मुख्य इच्छा श्रीमाताजी के दर्शन करने तथा उनका प्रवचन सुनने की थी। इस अवसर पर वे वातावरण के प्रदूषण, भौतिक प्रदूषण नहीं परन्तु समाज के ताने-बाने में व्याप्त आन्तरिक प्रदूषण पर बोले। ये सर्वविदित है कि बढ़ते हुए वाहनों की संख्या के कारण तथा वाहनों के तेल के धुएं के कारण दिल्ली में प्रदूषण समस्या अत्यन्त भयानक रूप धारण कर रही है। विश्व राष्ट्र संस्था (W.H.O.) की एक टिप्पणी के अनुसार दिल्ली उन बारह महानगरों में से एक है जिनमें भयानक प्रदूषण है और ऐसा अन्दाजा लगाया जाता है कि पूरे प्रदूषण के 67% भाग के लिए मोटर-वाहन उत्तरदायी हैं। श्री आडवाणी के आन्तरिक प्रदूषण को दूर करने का नुस्खा सहजयोग ध्यान धारणा द्वारा आध्यात्मिक उत्थान था। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री तथा वर्तमान केन्द्रीय केबिनेट मन्त्री श्री सुन्दर लाल पटवा ने इस अवसर पर कहा कि वे परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के चरणों में समर्पित होकर अभिभूत हैं। लेडी हार्डिंग अस्पताल के शरीर विज्ञान के प्रमुख डॉ. शोभा दास ने सहज योग द्वारा 'तनाव प्रबन्धन' विषय पर दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा मान्य एवं स्वीकृत दो शोध प्रबन्ध (Thesis) श्री माताजी को भेंट की। उन्होंने Lipid Peroxidation रोग पर किए जा रहे सहजयोग के प्रभाव शोध का संक्षिप्त वर्णन किया।

अंतर्राष्ट्रीय सम्मान एवं ख्याति प्रापत सर श्री सी.पी. श्रीवास्तव, श्रीमाताजी के पति, ने सहजयोग द्वारा अपने अन्तर्परिवर्तन की तीन अवस्थाओं का वर्णन करते हुए कहा कि पहली अवस्था आश्चर्य (Bewildermet), दूसरी प्रदीप्ति (Splendour), और तीसरी अवस्था समर्पण (Surrender) की थी। आरम्भिक अवस्था में जब उन्होंने लोगों के हृदय परिवर्तन होते देखे तो वे हक्के-बक्के रह गए। सहजयोगियों की सामूहिकता को परिवर्तित होते देखकर आश्चर्य की ये स्थिति भव्यता में परिवर्तित हो गई। क्योंकि समाज को परिवर्तित करने में सहजयोगियों की भूमिका सकारात्मक होती है और अब 80वें वर्ष में वे समर्पण की अवस्था में पहुँच गए हैं। एक ऐसी दिव्य शक्ति के सम्मुख समर्पण जिसने देवदूतों की अद्वितीय सामूहिकता (सहजयोगी/योगिनियों) का सृजन किया है, जिनका उद्देश्य परस्पर पावन प्रेम अभिव्यक्त करके धर्म, जाति के भेद-भावों से ऊपर उठकर एक मात्र सहजयोग परिवार बनाना है। उनके अनुसार यह सभा संयुक्त राष्ट्र की जनरल असेम्बली से भी अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विश्व की नैतिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक सभाओं की

हीरा अपना मूल्य नहीं जानता, आत्मज्ञान प्राप्त किए बिना मनुष्य भी अपना मूल्य नहीं समझता। आत्म-ज्ञान प्राप्त करके आत्मसाक्षात्कारी लोग कमल सम हो जाते हैं। वे दिव्य सुगन्ध फैलाते हैं और अपनी अन्तर्जात मूल्य प्रणाली के कारण अत्यन्त सुन्दर एवं आकर्षक होते हैं।

परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

21 मार्च 2000

प्रतीक है। विश्व भर में ऐसी ही सभाओं तथा उसके द्वारा नए मानव के सृजन के परम पावनी माँ के दिव्य स्वप्न का वर्णन भी उन्होंने किया। सर सी.पी. श्रीवास्तव के पास उपस्थित सभा के लिए दो प्रस्ताव थे: पहला विश्व भर में सहजयोग प्रचार कार्य के प्रति समर्पित होना और दूसरा यह कि जब तक विश्व का हर मानव परिवर्तित न हो जाए परम पावनी माँ अपने दिव्य साक्षात् मानव शरीर को बनाए रखें। सभा के प्रतिनिधि के रूप में श्री योगी महाजन ने दोनों प्रस्तावों को पारित किया।

अपने प्रवचन में श्री माताजी ने बताया कि देश भक्ति की भावना से परिपूर्ण हृदय लोगों का वे बहुत सम्मान करती हैं। ये लोग यदि आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त कर लें तो अपने चित्र द्वारा सहजयोग की शक्ति को प्रभावशाली रूप से उपयोग करते हुए समाज तथा देश की स्थिति को सुधार सकते हैं। उन्होंने कहा कि साक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् विध्वंसक विचार तथा गतिविधियाँ स्वत: ही छुट जाती हैं। उन्होंने कहा कि आत्मा के प्रकाश में व्यक्ति देख सकता है कि समाज तथा देश में क्या दोष है और उन्हें सुधारने की शक्ति भी उसमें होती है। कश्मीरी लोगों का दृष्टिकोण परिवर्तन करने के लिए कुछ सहजयोगियों की पेशकश का भी उन्होंने वर्णन किया।

"साक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् आप धर्म के सौन्दर्य को देख सकते हैं। धर्म के एकत्व (One ness) को समझा जा सकता है। यदि परमात्मा एक ही है तो आप धर्म के नाम पर किस प्रकार झगड़ सकते हैं।" उन्होंने रूस में विश्व निर्मला धर्म को अलग से धार्मिक मान्यता दिए जाने के विषय में बताया क्योंकि ये धर्म पूर्णत: घृणा रहित हैं और केवल सहृदयता (Compassion) में विश्वास करता है। उन्होंने बताया कि 'साकार' का दर्शन तो निराकार को समझने पर ही हो सकता है और यह प्रक्रिया केवल आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् ही सम्भव है। 'सच्चे ज्ञान' से सशस्त्र होकर आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति धर्म-वैमनस्य के झगड़ों को भूल सकता है। उन्होंने योग भूमि भारत की तुलना विश्व की कुण्डलिनी से की और बताया कि पूर्ण ज्ञान चैतन्य लहरियों के बोध द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि सच्चे ज्ञान को पाकर सहजयोगी पूरे समाज एवं देश को परिवर्तित कर सकते हैं। उदाहरण के रूप में उन्होंने हाल ही में आस्ट्रेलिया के सहजयोगी द्वारा उड़ीसा में नौ सहजयोग केन्द्र स्थापित किए जाने का वर्णन किया।

इस अवसर पर विश्व भर से आए सहजयोगी और योगिनियों में 33 अन्तर्राष्ट्रीय विवाह सम्पन्न हुए। ये विवाह विश्व निर्मल धर्म, जो कि विश्व बन्धुत्व की धारणा का समर्थक है, की दृढ स्थापना की ओर संकेत करते हैं।

इस बंजर भूमि में आप लोगों का प्रकाश एवं जीवन को ले आना देखकर मैं अभिभूत हूँ (निर्मल धाम की भूमि जो जन्मोत्सव से पूर्व बीहड़ थी) मुझे प्रसन्नता है कि सभी लोगों ने परस्पर प्रेम एवं सम्मानपूर्वक कार्य किया। दिल्ली सामूहिकता ने उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा के योगी, योगिनियों की सहायता से इतने कम समय में यह कार्य सम्पन्न किया, यह जानकर भी मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

21 मार्च 2000

दिवाली पूजा - 7.11.99
डेल्फी यूनान (ग्रीस)

आपको अत्यन्त ध्यानगम्य होना होगा

अत्यन्त सौभाग्यशाली तथा मंगलमय बात है कि हम यूनान, विशेषकर डेल्फी में दिवाली मना रहे हैं। इसका इतिहास अत्यन्त प्राचीन है और जैसा आप जानते हैं अथेना (Athana) यहाँ निवास करती थीं। वे आदि माँ थी। संस्कृत के 'अथ' शब्द का अर्थ है आद्य। इन स्थानों का वर्णन पुराणों में भी मणिपुर द्वीपे के नास से किया गया है। लिखा हुआ है 'मणिपुर द्वीपे'। इन पुराणों की कल्पना करें कि ये कितने प्राचीन हैं? कम से कम आठ हजार या इससे भी अधिक वर्ष पुराने हो सकते हैं और उन्होंने मणिपुर द्वीप का वर्णन नाभि स्थान के रूप में किया है जहाँ आदि शक्ति (Athena) का निवास है। मेरा कहने से अभिप्राय ये है कि वे लोग इस बात को कैसे जानते थे? हो सकता है घुमावदार क्षेत्र (कुण्डलिनी) के माध्यम से। परन्तु यह अत्यन्त स्पष्ट लिखा है और यहाँ भी वही चीज़ हमें मिलती है - अथेना का स्थान - जो कि नाभि में है। अथेना आद्य माँ भी हैं। वे कहते हैं कि ये नाभि के इर्द-गिर्द सृजित भव सागर में प्रकट हुईं। वहाँ से उन्होंने सारा कार्य किया। अवतरित होकर जब वे नीचे आईं तो उन्होंने श्री गणेश का सृजन किया और जब वे दाईं ओर को गईं तो माँ सरस्वती की सृष्टि की। हम कह सकते हैं कि पूरी सृष्टि का उन्होंने सृजन किया और तत्पश्चात् नीचे आकर वे कुण्डलिनी में स्थापित हो गईं परन्तु नीचे आते हुए उन्होंने हमारे उत्थान के लिए महालक्ष्मी तत्व का सृजन किया। यह उनकी गतिविधि थी, फिर भी कहा जाता है कि नाभि में इसलिए अवतरित हुईं क्योंकि यह सब करने के पश्चात् उन्हें नाभि में ही स्थापित होना था। हम ये भी देखते हैं कि श्री गणेश की कुण्डलिनी भी नाभि में है। तो ये कहा जाता है कि वे नाभि में इसलिए अवतरित हुईं क्योंकि मनुष्य, पशु या किसी भी जीव की शुद्ध इच्छा उसकी भूख है जिसका स्थान नाभि में है। वे इस भूख को सन्तुष्ट करना चाहती थीं और संभवतः इसी कारण से वे सर्वप्रथम नाभि में आईं। यही आदिशक्ति माँ हमें अथेना के रूप में मिलीं। इनके हाथ में एक कुण्डलिनी है और एक त्रिशूल। यूनानी पौराणिक कथाओं में ये सारा इतिहास अत्यन्त स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। परन्तु बाद में लोगों ने इन पौराणिक कथाओं को गलत मोड़ दे दिया क्योंकि मनुष्य जानता है कि हर चीज़ को किस तरह से बिगाड़ना है। उन्होंने सभी देवताओं को भी मनुष्यों की तरह से बनाना शुरु कर दिया। भारत के कुछ देवी देवताओं का वर्णन यूनानी पुराणों में भी है। भारत में इन देवी देवताओं को अत्यन्त पावन, दिव्य एवं सन्तवत रखा गया परन्तु यहाँ पर इन्हें मानव के स्तर तक खींच लाया गया और वहाँ दर्शाए गए बहुत से देवी देवता, भारतीय देवी देवताओं से भिन्न करके दिखाए गए क्योंकि उन्होंने इन्हें मानव का रूप दे दिया था। हैरानी की बात है कि शनैः

शनैः वे एक दूसरे से भिन्न कैसे हो गए! भारत में भी ऐसा किया गया परन्तु ये चल न पाया क्योंकि हमारे यहाँ पुराण हैं। जब-जब भी लोग इन्हें नष्ट करने या बिगाड़ने का प्रयत्न करते हैं, पुराणों के कारण ये अपनी वास्तविक स्थिति में लौट आते हैं। परन्तु यहाँ पुराणों की पूजा बाइबल, कुरान या किसी अन्य धर्म ग्रंथ की तरह से नहीं की जाती। पुराण तो मात्र प्राचीन इतिहास के ग्रन्थ हैं और व्यक्ति को देखना है कि ये बोध गम्य हैं, इनका वर्णन किया जा सकता है और लोग इनके बारे में जान सकते हैं। परन्तु जिस प्रकार उन्होंने मणिपुर द्वीप का वर्णन किया वह वास्तव में महान है। सिकन्दर के समय में भी यूनान बहुत ही समृद्ध एवं सुन्दर राज्य था। सिकन्दर के साथ आए एक भारतीय राजकवि ने इसका वर्णन विस्तार पूर्वक किया है कि चीजें कैसी थीं। उन्होंने लिखा है कि माँ आदिशक्ति का एक मन्दिर था, वहाँ पर श्री गणेश जी विराजमान हैं। यह सब उन्होंने स्पष्ट रूप से विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। मन्दिर पर पहुँचने वाली सीढ़ियाँ भी साढ़े तीन हैं - तीन सीढ़ियाँ बड़ी हैं और अन्तिम आधी है। इन्हें यदि आप पूरे विश्व में फैला दें तो ये साढ़े तीन कुण्डल बना सकती है। यह भी स्पष्ट कहा गया है कि ये स्वयंभू हैं श्री गणेश का स्वयंभू। ये भी कहा गया है कि डेल्फी के देव पुरुष अमर रहेंगे। उनका कथन है कि परमात्मा नाभि चक्र में निवास करते हैं। ये सारी बातें भारत में सिकन्दर के आने से बहुत समय पूर्व वर्णन की हुई हैं। इससे हम समझ सकते हैं कि यूनान और भारत में बहुत अधिक सौहाद्रपूर्ण सम्बन्ध होंगे। हो सकता है कि यहाँ से बहुत से लोग विदेश जाते हों या नाभि के घुमावदार क्षेत्र (Torsion Area) से पुराण लिखे गए हों।

जिस स्थान पर हम बैठे हैं यह अत्यन्त प्राचीन स्थान है जो वर्णनों के अनुसार सत्य है। इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु तत्पश्चात् इस स्थान का पतन हो गया। यहाँ पर कुण्डलिनी और चक्रों के चित्र भी बनाए गए। परन्तु जब इसाई लोग आए तो उन्होंने कहा ये सब असत्य है, इसे भूल जाएं। उन्होंने दूसरे पक्ष को नहीं देखना चाहा कि यदि यह सत्य नहीं है तो किस प्रकार इतिहास बन गया। अथेना तथा अन्य देवी देवताओं में श्रद्धा कम होती गई और श्रद्धा के लोप होने पर वे लोग प्रसन्न थे। इस यूनान की यह स्थिति थी। अब एक बार फिर हम लौट आएं हैं। मणिपुर द्वीप, जो कि नाभि है, में हम आनन्द से लक्ष्मी पूजा के लिए बैठे हुए हैं। लक्ष्मी जी जल से प्रकट हुई, इसमें कोई सन्देह नहीं है। परन्तु अथेना तो लक्ष्मी की माँ हैं। वे सर्वव्याप्त हैं और उन्होंने लक्ष्मी की सृष्टि की और इसी लक्ष्मी का शासन यहाँ पर था। वे यहाँ स्वयं को अभिव्यक्त करती रहीं और उन्होंने यहाँ बहुत सुन्दर चीजों का सृजन किया। यूनानी लोग बहुत समृद्ध थे और सभी प्रकार के व्यापारों तथा जहाजरानी किया करते थे। जहाजरानी उनका अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यापार है। मैं भी यहाँ पर अपने पति के साथ इसलिए आई थी क्योंकि वे भी जहाजरानी के व्यक्ति थे। जब हम हवाई अड्डे पहुँचे तो मैं हैरान थी वहाँ पर एक मन्त्री की पत्नी, दूसरे मन्त्री की पत्नी और प्रधानमन्त्री की पत्नी उपस्थित थीं। मुझे हैरानी हुई। आम तौर पर वे वहाँ आने वाली किसी महिला को लेने हवाई अड्डे नहीं जाती। कहने लगी हमारे पतियों ने हमें कहा कि यदि तुम्हें किसी पूर्ण, निर्मल, अत्यन्त मंगलमय, सौम्य महिला को

देखना हो तो वे श्रीमती श्रीवास्तव हैं, इसलिए वे मुझे मिलने आई, ये देखने के लिए कि कौन सी सौम्य महिला आई हैं। उन्होंने बड़े प्रेमपूर्वक मेरी देखभाल की। इसके पश्चात् वहाँ चुनाव थे। जिस प्रकार उन्होंने सम्मानपूर्वक मुझसे पूछा कि ये सौम्यता आपने किस प्रकार प्राप्त की, वह मैं भूल नहीं पाती। मैंने उत्तर दिया ये मैंने विकसित नहीं की, ये तो मुझमें जन्मजात है। सौम्य लगने के लिए मैंने कुछ भी नहीं किया, इसके लिए कोई सौन्दर्य प्रसाधन केन्द्र भी नहीं है। वे कहने लगी नहीं, नहीं। सारे पुरुष आपकी प्रशंसा करते हैं कि इन भयानक दिनों में भी वे अत्यन्त शान्त महिला हैं।

दिवाली महत्वपूर्ण है क्योंकि यह अमावस्या का दिन होता है। इसकी अत्यन्त अंधेरी और लम्बी रात होती है जिसे समाप्त करने के लिए दीप जलाए जाते हैं। पूरे वातावरण में गहन अंध कार है और सूर्य छिप चुका है। इसलिए दीपक जलाए जाते हैं। इसी प्रकार यह कलियुग है, इसमें भी गहन अंधकार है और हमारे जीवन को कष्टकर बनाने के लिए इसमें बहुत समस्याएं हैं। हम नहीं जानते कि प्रेम पूर्वक किस प्रकार चला जाए। आज स्वयं को आत्मा के प्रकाश से ज्योतित कर लेना अत्यन्त आवश्यक है। कलियुग अपनी पराकाष्ठा पर है। परमात्मा के नाम पर लोग जो कार्य कर रहे हैं ये हिला देने वाले हैं। परन्तु ये कलियुग है जिसमें मनुष्य ने सारा विवेक खो दिया है। हम नहीं जानते कि हम किस दिशा में चल रहे हैं। हम सभी प्रकार के गलत कार्य कर रहे हैं और फिर भी हम सोचते हैं कि हम ठीक हैं। जो भी कुछ उन्हें कहो वे कहते हैं कि इसमें क्या दोष है? अपने सारे कुकृत्यों के उत्तर में वे यही कहते हैं। किसी कार्य के लिए आप उन्हें रोकिए तो वो कहते हैं कि ऐसा करने में क्या दोष है? और इस प्रकार मानव अत्यन्त व्यक्तिवादी बन गया है। एक प्रकार से वह खो चुका है क्योंकि वह फैशन के पीछे भागता है एक विशेष शैली के पीछे भागता है। मेरा कहने से अभिप्राय ये है कि उनका स्वयं पर नियंत्रण नहीं है। लोग दास बन गए हैं फिर भी सोचते हैं कि वे स्वतन्त्र हैं। वे स्वतन्त्र लोग है और जो चाहे कर सकते हैं। कलियुग में इस स्वच्छंदता के परिणामस्वरूप वे लोग अत्यन्त घिनौने हो गए हैं। जिस प्रकार के कुकृत्य वे इस कलियुग में कर रहे हैं उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता। चर्च आदि में उन्हें यह सब सिखाया जाता है। वे इतने भयानक रूप से अनैतिक हो गए हैं कि विश्वास नहीं होता, परमात्मा के नाम पर उनकी छत्रछाया में किस प्रकार ऐसा हो सकता है? परन्तु ऐसा होने लगा है, यही कलियुग है। इस कलियुग को समाप्त करना आवश्यक है। रात्रि के इस अन्धकार को समाप्त करने के लिए हमें रोशनी करनी होगी। इसी प्रकार लोगों का भी आत्मसाक्षात्कारी होना आवश्यक है। लोगों के हृदय में प्रकाश होना चाहिए। एक बार जब लोगों के हृदय में ज्योति हो जाएगी तो जिस अज्ञानान्धकार के कारण हम कष्ट उठा रहे हैं वह समाप्त हो जाएगा और हमें पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाएगा। तो जिस नवयुग के बारे में हम यहाँ बात कर रहे हैं यह इस प्रकार कार्यान्वित हो जाएगा कि सभी लोग आत्माक्षात्कारी हो जाएंगे और उन्हें इस चीज का ज्ञान होगा कि ठीक क्या है? सच्ची विद्या और ज्ञान क्या है?

तो हमारा मार्ग ज्ञान का मार्ग है, ज्ञान जो कि प्रेम है, करुणा है। यही बात हमें समझनी है कि हम एक अन्य क्षेत्र में प्रवेश कर गए हैं,

एक ऐसे कार्य-क्षेत्र में जहाँ कलयुगी झगड़े और कष्ट प्रवेश नहीं कर सकते। कलियुग का साम्राज्य बाहर है हमारे अन्दर नहीं। यह ऐसा ही है कि हम अब केवल स्वतन्त्र ही नहीं है, परन्तु जो कुछ भी हम कर रहे हैं वह स्वतन्त्रता के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

आज हम किसी भी ऐसी चीज से लिप्त नहीं है जो हमें दूषित कर सके या सत्य पर हमारी पकड़ को ढीला कर सके। लोगों में जब इस प्रकार का व्यक्तित्व आ जाता है तब क्या होता है? तब कलियुग की ये सभी धारणाएं लुप्त हो जाती हैं। **परन्तु मैं कहूंगी कि यह अन्तिम निर्णय है। जो लोग सत्य को स्वीकार करेंगे, सत्य में रहेंगे और सत्य में उन्नत होंगे वे बच जाएंगे और बाकी सब नष्ट हो जाएंगे।** ऐसा पहले भी कहा जा चुका है। जैसे किसी बाग में कुछ पेड़ हैं जिनका भली-भांति पोषण होता है, जिन्हें काफी मात्रा में जल और प्रेम मिलता है और जो लोगों को बहुत कुछ प्रदान करते हैं, वे पेड़ बने रहते हैं। बाकी के पेड़ जलकर समाप्त हो जाते हैं। इसी प्रकार हमें भी सर्वप्रथम प्रेम को स्वीकार करना चाहिए, प्रेम लेना चाहिए, प्रेम से अपना पोषण करना चाहिए और वही प्रेम अन्य लोगों को देना चाहिए। कलियुग के अभिशाप से बचने की यह अत्यन्त सहज विधि है। कलियुग इतना अंधकारमय है कि हम एक दूसरे को चोट पहुँचाने लगते हैं। उदाहरण के रूप में आप लोग यहाँ बैठे हुए हैं, अचानक अंधेरा हो जाता है, आपको समझ नहीं आएगा कि किस प्रकार यहाँ से निकलें, आप किसी को चोट पहुँचा रहे हैं या नहीं, आप किसके साथ बैठे हुए हैं कुछ भी आपको समझ नहीं आएगा। यही अंधेरा हृदय में है, मस्तिष्क में है और आप नहीं जानते कि आप कहाँ हैं, क्या कर रहे हैं और आपको क्या करना चाहिए। आपे से बाहर होकर आप एक दूसरे को चोट पहुँचा रहे हैं। यही कलियुग है। **इसे पहचानकर जो भी इसके शिकंजे से निकल जाता है वही सहजयोगी है। यदि आप अब भी उसी परिसर में हैं, असन्तुलन की उसी परिधि में, तो आप भी अन्य लोगों जैसे हैं।** एक अन्य बात जो कलियुग में है वो यह है कि चाहे आपको चोट पहुँची हो, चाहे आप नष्ट हो गए हों लोग स्वयं को दोषी नहीं मानते। इस प्रकार एक अन्य भयानक प्रवृत्ति विकसित हो सकती है जिसके कारण आप दूसरों को दोषी ठहराते हैं स्वयं को कभी दोषी नहीं समझते कि आपने स्वयं अपने को चोट पहुँचाई है। आपने ही गलती की थी जिसका ये परिणाम है।

यही वह स्थिति है जिसे हम भ्रम कहते हैं इस भ्रम की स्थिति का समाप्त होना आवश्यक है। कलियुग के लिए कहा गया है कि यह भ्रम का युग है और यदि इस भ्रम में आप फँस गए तो आप समाप्त हो जाएंगे। परन्तु भ्रम को यदि आप पहचान लेंगे तो सत्य को खोजने लगेंगे। यही कारण है कि आज जिज्ञासा बहुत बढ़ गई है क्योंकि लोग भ्रम को महसूस कर सकते हैं। वे जानते हैं कि ये सत्य नहीं है और जब वे ये बात जान जाते हैं तब क्या करते हैं? तब वे जानना चाहते हैं कि सत्य क्या है और कहाँ है? और इसे खोजने का वे प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार कलियुग में सत्य-साधना आरम्भ हुई।

दमयन्ती पुराण नामक एक अन्य पुराण में कलियुग की कहानी बताई गई है। कलि द्वारा फैलाए गए भ्रम के कारण नल की पत्नी दमयन्ती अपने पति से बिछुड़ गई। एक दिन ये भयानक

कलि महाराज नल के हाथ लग गया और नल ने उसे कहा कि तुम्हारा गला दबाकर अब मैं तुम्हें समाप्त कर दूंगा। कलि ने कहा कि आप ऐसा कर सकते हैं परन्तु पहले मेरा महात्म्य सुन लें, कि मेरा महत्व क्या है और मैं यहाँ पर क्यों हूँ? नल प्रतीक्षा कर रहा था, उसने कहा कि आप यदि मुझे सुनना चाहेंगे तभी मैं आपको बताऊंगा। मैं जब आऊंगा और विश्व पर शासन करूंगा अर्थात् जहाँ पर भी कलियुग होगा, लोग भ्रान्ति में फँस जाएंगे, वे समझ न पाएंगे कि ये सत्य है या असत्य और वे सत्य को खोजने का प्रयत्न करेंगे। केवल वही लोग नहीं जो सब कुछ त्याग कर जंगलों में चले जाएंगे, परन्तु अन्य प्रकार के लोग भी, वो लोग जो अब तपस्यारत हैं, कलियुग में जन्म लेंगे और सर्वसाधारण गृहस्थों की तरह इस भ्रम में फँस जाएंगे। भ्रम में फँसने के पश्चात् वे साधना शुरु करेंगे क्योंकि वे महसूस कर लेंगे कि ये असत्य है और तत्पश्चात् सत्य को खोजने लगेंगे। केवल तब उन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होगा हजारों वर्ष पूर्व कलि ने यह सब अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में बताया। तो कलियुग ही वह समय है जब लोग आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर सकेंगे। वे अपनी आत्मा को जान जाएंगे, सत्य को जान जाएंगे। बहुत समय पूर्व ये बात कही गई थी और अब आप इसे स्वयं देख सकते हैं। इस कार्य के लिए यही समय था क्योंकि सतयुग की तरह से आप लोग ठीक स्थिति में होते तो आप खोजते नहीं। तब आप आज्ञाकारी और अच्छे लोग होते और सत्य को स्वीकार कर लेते। परन्तु कलियुग में अब वास्तव में पूर्ण सत्य को खोजने लगते हैं। इस प्रकार यह दीप ज्योतित आत्मा को चित्रित करते हैं। आप लोग आत्मसाक्षात्कारी जीव हैं। मेरे लिए यही दिवाली है। लोग यदि आत्मसाक्षात्कारी हैं यही दीवाली है कि वे कलियुग के अंधकार को दूर करके इसके सौन्दर्य और खुशी का आनन्द लें। मैं कहूंगी कि ये अत्यन्त प्रतीकात्मक बात है कि दिवाली शुरु हो चुकी है। हमारे पास बहुत सी दीप हैं और बहुत से अन्य दीप हमने जलाने हैं। इसलिए नहीं कि इन दीपकों का प्रकाश कम है। हमें अधिक दीप क्यों चाहिए? इनकी क्यों आवश्यकता है? ताकि सभी लोगों को बचाया जा सके। हमारा प्रयत्न सभी लोगों को बचाने का है। यह कठिन कार्य है अत्यन्त कठिन।

अब आप देख सकते हैं कि कैसे बीज की तरह आत्मसाक्षात्कारी लोग दूर दराज स्थानों पर स्थापित हो जाते हैं और वहाँ वे फलते फूलते हैं और सुन्दर वृक्ष बनकर अन्य लोगों को सुगन्ध तथा छाया प्रदान करते हैं। यही कारण है कि सभी स्थानों के लोगों को जागृत किया जा रहा है और आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त करके वो भी अन्य लोगों को जागृत करते हैं। यही सारी प्रक्रिया है जो भली-भांति अन्तर्रचित है, यह ऐसी ही दिखाई पड़ती है और सुन्दर ढंग से कार्यान्वित हो रही है। **सन्देहपूर्ण तो केवल ये बात है कि कितने लोग सहजयोग में आएंगे और कितनों को उबारकर हम बचा सकेंगे? केवल यही समस्या है और इसके लिए आपको तैयार रहना है कि आपमें से हर एक सहजी ये निर्णय ले कि मुझे प्रतिदिन कम से कम एक व्यक्ति को आत्मसाक्षात्कार देना है प्रतिदिन एक व्यक्ति को।** मान लो हमारे सम्मुख कुछ लोग नदी या समुद्र में डूब रहे हैं, ऐसे में आप क्या करते हैं? आप सब मिलकर उन्हें बचाने के लिए दौड़ पड़ते हैं, उनके जीवन की रक्षा करने के लिए आप

भरसक प्रयत्न करते हैं। इसी प्रकार हमें समझना है कि हमें सभी लोगों के जीवन की रक्षा करनी है और इसके लिए हमें बहुत कठिन कार्य करना होगा।

भ्रम से सत्य तक उन्नत होने के मार्ग में भी कुछ समस्या है जिनका मुकाबला उचित ढंग से होना चाहिए। भूख इन समस्याओं में से एक है। भूख धन के लिए हो सकती है, भोजन की हो सकती है या किसी अन्य चीज की भी। भूख यदि धन की है तो यह आपमें स्थायी रूप से जम जाएगी क्योंकि लोभ की कभी सन्तुष्टि नहीं होती। परन्तु आधुनिक युग में तो लोग धन के पीछे वास्तव में पागल हुए जा रहे हैं। वे नहीं सोचते कि किसी दूसरे के पास भी पैसा है या नहीं, किसी दूसरे के पास ये सुख सुविधा है कि नहीं, उन्हें तो बस अपने धन का प्रदर्शन करना अच्छा लगता है। वे दिखावा करना चाहते हैं कि समृद्ध हैं बहुत अच्छे हैं और अपने अहं से सभी प्रकार के कार्य किए चले जाते हैं। वे सोचते हैं कि इसमें कोई दोष नहीं है, क्या दोष है, क्या गलती है? सबसे बड़ी बाधा ये है कि आपका मस्तिष्क अहं संचालित है और आप बिना सोचे-समझे इसके आदेशानुसार कार्य करते रहते हैं। मस्तिष्क भ्रान्ति, भ्रम की पकड़ में है। इस बात को समझने की बहुत सी विधियाँ हैं। तो मैंने कहा कि यदि वे चाहें तो सहजयोग में आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर सकते हैं और आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति के पहले दिन ही अपनी समस्याओं के साथ जहां चाहे जा सकते हैं। इसने आश्चर्यजनक परिणाम दिए क्योंकि आत्मसाक्षात्कार के प्रथम दिन व्यक्ति बहुत दृढ़ मन:स्थिति में होता है और सारी गलत चीज़ों से बचता है।

आपमें से बहुत से लोग सहजयोग में उन्नत होकर पूरी तरह से परिवर्तित हो गए हैं यह देखकर मुझे बहुत हर्ष हो रहा है। मैंने इसके लिए कुछ विशेष नहीं किया, मैं नहीं सोचती मैंने तो मात्र आत्म-साक्षात्कार दिया। परन्तु मैं कुछ नहीं करती, मेरे बिना कुछ किए भी यदि आप ज्योतित हो जाते हैं और ये सब प्राप्त कर लेते हैं तो मुझे विश्वास नहीं होता। यह कैसे हो सकता है? मैंने कुछ नहीं किया, आपने अपना आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया। परन्तु अब जब मैं देखती हूँ और इस पर दृष्टि डालती हूँ तो मुझे लगता है कि आप लोग कितना सुन्दर गाते हैं कितने सुन्दर, मधुर और परस्पर कितने स्नेही! मुझे विश्वास हो गया है और मैं महसूस करती हूँ कि सहजयोग में स्थापित होने के लिए आपको अधिक समय नहीं लगेगा। ये समझने का बहुत उपयुक्त समय है कि हमें सहजयोग के प्रति पहले से भी अधिक समर्पित होना है। कुछ अन्य समस्याएं भी हैं जैसे लोग कह रहे हैं श्रीमाताजी कुछ लिखित नियम होने चाहिए। मैंने कहा, नहीं। अपने अनुभव से भी आप कार्य कर सकते हैं। उदाहरण के रूप में उस दिन मैंने कहा कि लक्ष्मी तत्व है। अब देखें कि किस प्रकार लक्ष्मी तत्व दुर्बल पड़ता है? आप यदि ये जानना चाहें तो ये कार्य अत्यन्त सुगम एवं साधारण है क्योंकि ये लक्ष्मी अत्यन्त चंचल है। किसी नौकर को आप एक बार सौ रुपये का नोट देकर देखें, तुरन्त वह मदिरालय जाकर शराब पीएगा। लक्ष्मी तो हैं परन्तु जैसे ही उसे लक्ष्मी मिलती है वह मदिरालय जाकर शराब पीने का प्रयत्न करता है। अब इस लक्ष्मी की स्थिति की आप कल्पना कर सकते हैं।

लक्ष्मी बहुत अच्छी है परन्तु प्रलोभित करती है। तो आपको देखना होगा कि जो भी

धन आपके पास है उसे आप बैंक में रखें या जो भी करें, इसे पूरा का पूरा खर्च न करें। ऐसा न करें। दूसरे यह भी समझ लें कि यदि सारे दरवाजे बन्द कर दिए जाएं और एक ही दरवाजे से लक्ष्मी प्राप्त हो तो यह रुक जाएगी। नि:सन्देह यह रुक जाएगी, यदि आप कंजूस हैं तो यह रुक जाएगी। परन्तु निकास न होने के कारण यह सड़ जाएगी। यदि आप दूसरा दरवाजा खोल दें तो, आप हैरान होंगे कि न केवल लक्ष्मी बाहर जा सकती है, यह बहुत अधिक स्वच्छ हवा भी ले सकती है, बाहर से बहुत सी स्वतन्त्रता भी प्राप्त कर सकती है क्योंकि आपने दूसरा द्वार खोल दिया है। आप आजमाएं केवल एक द्वार खुला होने पर कुछ भी अन्दर नहीं आ पाता। केवल एक द्वार खोल कर देखें, हवा भी अन्दर नहीं आएगी, कुछ भी नहीं आएगा। दूसरा द्वार खोलकर देखें कि किस प्रकार हवा के झोंके अन्दर आते हैं! इसी प्रकार जो व्यक्ति धन प्राप्त करना चाहता है उसे चाहिए कि जो भी धन उसके पास है उसे खर्च करना सीखें। इस कलियुग में ये भी एक वरदान है, क्योंकि सन्देह, भ्रम उत्पन्न करना कलियुग का कार्य है। यह भ्रम उत्पन्न करता ही रहेगा। परन्तु आपको सत्य पर डटे रहना होगा तभी कलियुग कार्यान्वित न हो पाएगा। केवल उसी स्थिति में यह कार्य न कर पाएगा। तो ये समझ लेना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि हर समय हमारी परीक्षा होती है। साक्षी रूप से ये सब देखा जाना चाहिए। लक्ष्मी जी की कार्यशैली देखना बहुत दिलचस्प है। धोखेबाजी, लूटखसोट, झूठ फरेब करने वाले व्यक्ति के घर से हमें भाग जाना चाहिए। लक्ष्मी ऐसे व्यक्ति के पास नहीं रुकती। वह चली जाती है। हमारे ईद-गिर्द ये सब घटित हो रहा है। मैं ये बात अपने लिए नहीं कह रही, ऐसा सर्वत्र हो रहा है। हमें अपने मस्तिष्क की गतिविधि स्पष्ट देखनी चाहिए। ये कहाँ जा रहा है, क्या सोच रहा है? लक्ष्मी आपको वह सोचने पर विवश करती है जो आपको नहीं सोचना चाहिए। जैसे मैंने आपको बताया लोग शराब पीने लगते हैं और घुड़ दौड़ जुआ खेलने लगते हैं। कहने से मेरा अभिप्राय है कि वे सभी बुराइयाँ करने लगते हैं, क्यों? क्योंकि उनके पास पैसा है और इसे उन्होंने कहीं खर्च करना है। इस पैसे को वे अच्छी चीजों पर, अच्छी उपलब्धियों के लिए नहीं खर्च करते। यही कारण है कि लोग अब व्यर्थ की चीजों पर बहुत सा पैसा खर्च करते हैं। फिजूलखर्ची से आप अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकते, क्योंकि आपका लक्ष्य तो पूर्णता को प्राप्त करना, आत्मा बनना है। ये बात समझ लेना अति सूक्ष्म है। आप गलती करते हैं और कहते हैं कि क्या दोष है, इसमें क्या है? मैं यदि निरन्तर कोई गलत या गम्भीर कार्य करूंगा तो शरीर प्रतिक्रिया करेगा नहीं, कुछ भी प्रतिक्रिया नहीं करेगा न आपका मस्तिष्क, न शरीर। आप देखें इन सारे वर्षों का मेरा अनुभव ये है कि अब भी कुछ सहजयोगी लक्ष्मी तत्व में फँसे हुए हैं। वे मुझे धोखा देना चाहते हैं, सहजयोग से पैसा बनाना चाहते हैं। कुछ अन्य लोग आपस में व्यापार करना चाहते हैं। सभी बुरी तरह से असफल हो गए हैं, इतना बुरी तरह से कि वे या तो जेल में हैं या दिवालिए हो गए हैं। अत: कभी सहजयोगियों से व्यापार न करें। सहजयोगियों के लिए आवश्यक है कि वे अन्य सहजयोगियों से व्यापार न करें। ये सिद्धान्त जब आप समझ जाएंगे तो आपस में व्यापार नहीं करेंगे। मुझसे भी आप व्यापार नहीं कर सकते। परन्तु ये छोटी-छोटी गलतियाँ लोग

करने लगते हैं। उदाहरण के रूप में दो सहजयोगी हैं एक जापान से और दूसरा अमरीका से। वे कहने लगते हैं, "अरे, आप भी सहजयोगी हैं और मैं भी सहजयोगी हूँ, क्या आप मुझे कुछ जाली दस्तावेज़ या कुछ सूचनाएं दे सकते हैं?" वे आपसे प्रश्न पूछते चले जाते हैं। परन्तु क्यों? हम ऐसा नहीं करना चाहते। जो चीज़ आपके पास हो उसमें उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है। जब लोग आपसे व्यापार की बात करने लगें तो ये बात आपको अत्यन्त विवेक शीलता पूर्वक समझ लेनी चाहिए। सहजयोग में परस्पर कोई व्यापार नहीं होता। केवल आत्मसाक्षात्कार का लेन-देन होता है। यह छोटा सा रहस्य जब आपको समझ आ जाएगा तो धन, जो कि भ्रामक है, की भूमिका भी समाप्त हो जाएगी। **आप यदि समर्पित हैं तो सभी कुछ अत्यन्त सुन्दरतापूर्वक कार्यान्वित होता है परन्तु यदि आप समर्पित नहीं हैं तो भी इसे कार्यान्वित किया जा सकता है क्योंकि जब आप परिणाम देखेंगे तो आपको चोट पहुँचेगी, कष्ट होगा और आप यह सब त्याग देंगे।** तो जो भी कुछ घटित होता है, चित्त द्वारा स्पष्ट देखकर आप जान जाते हैं कि आप कितने कष्ट में चले गए हैं और इसे त्याग देते हैं। परन्तु ऐसा करने से पहले अपनी चैतन्य लहरियों के माध्यम से देखने का हमारे पास एक बहुत अच्छा तरीका है। चैतन्य लहरियाँ महसूस करके स्वयं देखें। क्या चैतन्य लहरियाँ अच्छी हैं? चैतन्य लहरियाँ अगर अच्छी नहीं हैं तो आपको समझ जाना चाहिए कि कोई समस्या है। आप किसी भी मनुष्य, किसी भी धर्म गुरु, किसी भी करोड़पति या किसी अन्य चीज़ के बारे में जान सकते हैं। परन्तु सबसे पहले आप ये जान लें कि व्यक्ति पक्का सहजयोगी है या नहीं है। ऐसा किसी व्यक्ति विशेष के साथ होता है और सामूहिकता में भी हो सकता है। मैंने देखा है कि सामूहिकता में लोग काफी पथभ्रष्ट होते हैं और एक नकारात्मक व्यक्ति तुरन्त दूसरे नकारात्मक व्यक्ति को पहचान लेता है और दोनों मिलकर कार्य करना शुरू कर देते हैं। अत: आपको अत्यन्त सावधान रहना होगा, आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो चुका है, आपको सभी कुछ मिल गया है। सहजयोग में आपको धन भी प्राप्त हो गया है। अब आपको समझ जाना चाहिए कि चोरों को घुसने के लिए यह बहुत अच्छा प्रलोभन है। अत: आपको बहुत सावधान होना चाहिए और व्यर्थ की चीजों की ओर आकर्षित नहीं होना चाहिए। आपकी माँ की ओर से यही सुरक्षा है कि वे इस प्रकार आपकी रक्षा करना चाहती हैं। **जीवन की ओर हमारा दृष्टिकोण केवल एक साक्षी का होना चाहिए।** हर चीज़ को स्पष्ट देखें। धीरे-धीरे यह दृश्य इतना स्पष्ट हो जाएगा, इतना सूझ-बूझ से पूर्ण कि आप हैरान रह जाएंगे। तब अपनी किसी भी चीज का उपयोग करते हुए आपको सोचना नहीं पड़ेगा, केवल चैतन्य लहरियाँ देखनी होंगी। चैतन्य लहरी कैसी है? चैतन्य लहरियाँ क्या कह रही हैं? क्योंकि वही आपकी पथ प्रदर्शक है। **जिन लोगों की चैतन्य लहरियाँ अच्छी नहीं है उन्हें चाहिए कि स्वयं को स्थापित करें। चैतन्य लहरियों का ज्ञान यदि अच्छा नहीं है तो इसका अर्थ है कि आप लोगों को अच्छी तरह से पहचान नहीं सकते और न ही आपमें ठीक से यह ज्ञान है। तो सर्वप्रथम अपनी चैतन्य लहरियों को सुधारें और अपने चक्रों को भी ठीक करें।** तत्पश्चात् आप देख

सकते हैं कि आपके सहयोगी कैसे हैं। वे कौन हैं? अब आपका मस्तिष्क इतना प्रकाशमय हो गया है कि आप हर चीज़ को एकदम से देख सकते हैं। इस ज्योतित मस्तिष्क का उपयोग यदि आप नहीं करते तो हैरान होंगे कि कुछ नकारात्मक शक्तियाँ विद्यमान हैं जो कार्य कर सकती हैं। अब हम एक ऐसे बिन्दु पर हैं कि नकारात्मक शक्तियाँ हानि नहीं कर पाएंगी। परन्तु जब मैंने सहजयोग आरम्भ किया था तब स्थिति बहुत खराब थी। स्थिति बहुत खराब थी और हमारे पास अधपके, चौथाई पके, 1/16 पके लोग थे। मेरी समझ में नहीं आता था कि उन्हें किस प्रकार बताऊँ। क्योंकि उन्हें यदि मैं स्पष्ट बता देती तो वे दौड़ जाते, वो सहजयोग में आते ही नहीं। अन्य स्थानों पर गुरु लोग क्या करते हैं? वे केवल पैसा बटोरते हैं। लोग सोचते हैं कि अब हमने गुरु को पैसा दे दिया है अब हम उसे कैसे छोड़ सकते हैं। वे पैसा देते रहते हैं और उससे चिपके रहते हैं।

परन्तु सहजयोग में पैसे का कोई काम नहीं है, इसलिए लोग आते हैं और गायब हो जाते हैं। ये आम बात है कि लोग कुछ समय के लिए ही सहजयोग में आ जाते हैं। परन्तु यदि वे वास्तव में विशिष्ट लोग हैं तो वे टिकते हैं और चीज़ों को उचित कोण से देखने लगते हैं, क्योंकि अब वे साक्षात्कारी हैं, उन्नत हैं और परिपक्व हैं। तो इस प्रकार हमें कलियुग की इस घोर अंधेरी रात में दिवाली के माध्यम से लौटना पड़ा। हमें यही करना है, विनम्र होना है और देखना है कि हम ठीक हैं या नहीं, ठीक दिशा में जा रहे हैं या नहीं? केवल आप ही इस बात का निर्णय कर सकते हैं। चैतन्य लहरियों से आप तुरन्त जान जाएंगे कि आप पकड़े हुए हैं कि ठीक है। जो भी निर्णय लेना होगा उसके लिए आपको पूरी तरह से अपने हाथों का उपयोग करना होगा। बातों से कुछ न होगा, भाषणबाजी से कोई लाभ न होगा। केवल आपके अनुभव और सूझ-बूझ के माध्यम से ही हर चीज़ का गहन प्रभाव आप जान पाएंगे, तथा यह भी कि ये कैसे लोग हैं? किस प्रकार की बातें कर रहे हैं और आपको क्या करना चाहिए? आरम्भ में हो सकता है यह थोड़ा सा मानसिक हो परन्तु बाद में यह पूर्णत: मस्तिष्क से ऊपर की बात हो जाता है।

अब, जैसा कि मैंने कहा कि कलियुग समाप्त हो गया है, समाप्त होने वाला है। परन्तु अब भी ऐसे लोग होंगे जो तथाकथित सामान्य स्थिति की ओर लौट जाना चाहेंगे। परन्तु इससे बचने का भी एक उपाय है; ये है ध्यान धारणा। ध्यान धारणा से आप सभी कुछ प्राप्त कर सकते हैं और तब आप हैरान होंगे कि हमें करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण कार्य दे दिया गया है और महत्वपूर्णतम कार्य स्वयं के प्रति सावधान रहना है। मुझे आशा है कि आप लोग लक्ष्मी के जाल में नहीं फँस रहे हैं। जो लक्ष्मी हमें अलंकृत करती है वही हमें बदसूरत भी बना सकती है। अत: हमें चाहिए कि इस सुन्दर, सुसज्जित लक्ष्मी को अपना आदर्श बनाए रखें और यह कार्य करती है। हमारा यही लक्ष्य है, यही आदर्श है और यही हमने करना है। तो हम नई सरकार स्थापित कर सकते हैं। हमारा पूर्ण दृष्टिकोण ऐसा होना चाहिए कि हमें चुस्त रहना है क्योंकि अब आप ध्यान धारणा-गम्य हो गए हैं। किसी चीज़ के विषय में ज्यों ही आप सोचना आरम्भ करते हैं तो ध्यान में चले जाते हैं। आपका सोचना समाप्त हो जाएगा। आप सोच न पाएंगे

और ऐसी स्थिति में यदि आप ध्यानगम्य नहीं हैं तो आप भटक सकते हैं। परन्तु ध्यान धारणा में यदि आप होंगे तो खो नहीं सकते, क्यों? क्योंकि तब आप अपना जीवन सत्य के हाथों सौंप चुके होंगे। अपना हाथ आपने वास्तविकता के हाथ में पकड़ा दिया होगा और वास्तविकता आपका पथ-प्रदर्शन करती है आपकी रक्षा करती है, आपको देखती है, आपकी सहायता करती है और आप गलत दिशा में नहीं जा सकते। चाहे आप ध्यानमग्न होंगे फिर भी चिन्ता की कोई बात नहीं आपको कुछ नहीं होगा। परन्तु यदि आप कभी ध्यान गम्य नहीं होते तो आपको बचा पाना असंभव है। आपकी रक्षा असंभव है। आपका परिपक्व होना असम्भव है। परिपक्व होने के लिए आपको अत्यन्त ध्यानमय होना होगा यह बहुत महत्वपूर्ण है। मैं कहूंगी कि आज जो सहजयोगी ये पूजा कर रहे हैं और इसके बाद उत्थान की एक अन्य पूजा करेंगे उन्हें अत्यन्त सावधान रहना है कि कहीं ध्यानधारणा की स्थिति टूट न जाए। कभी नहीं। आपको केवल देखना भर है कि आप कहाँ तक जा चुके हैं? किस सीमा तक आपने अपनी समस्याओं का समाधान कर लिया है। ज्यों ही इस चीज़ को आप देखते हैं आप तुरन्त पूर्ण आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति बन जाते हैं।

अतः आदेश ये है कि हमें ये समझना चाहिए कि हम आत्म साक्षात्कारी व्यक्ति हैं। महत्वपूर्ण क्या है? हम क्यों आत्मसाक्षात्कारी हैं केवल अपनी इच्छाओं के लिए नहीं। केवल अपनी शुद्ध इच्छाओं के लिए भी नहीं, दूसरों के लिए। सामूहिक चेतन होकर आप अन्य लोगों की सहायता करने लगते हैं। आप दृढ़तापूर्वक खड़े नहीं होंगे तो आप भटक जाएंगे और अन्य लोग भी भटक जाएंगे। यही मार्ग है जिससे हमने वास्तव में आगे बढ़ना है, सत्य की ओर बढ़ना है और अन्य लोगों के लिए सत्य को लाना है और उनकी रक्षा करनी है। केवल इसी प्रकार आप अपना प्रेम, अपना स्नेह उनके प्रति अभिव्यक्त कर सकते हैं।

मैं सोचती हूँ कि इस विषय को संभालना बहुत कठिन है, इसके विषय में बात करना इसे आत्मसात करने से कहीं सुगम है। **तो अब जब आप मुझे सुन रहे हैं तो इसके पश्चात् ध्यान करने का प्रयत्न करें। ध्यान अवस्था में आप आत्मसात करेंगे और विवेकशीलता, चैतन्य प्रदान करना और सहजयोग द्वारा सभी कार्यों को करने की शक्ति जो आपके अन्दर विद्यमान है पूर्णतः और निरन्तर गतिशील हो जाएगी। परन्तु यदि आप ध्यान धारणा नहीं करते, आपका ध्यान यदि कहीं और है तो यह कार्यान्वित न होगा, कार्यान्वित न होगा।**

आज खुशियाँ तथा उत्सव मनाने का दिन है कि सर्वत्र हमारे इतनी बड़ी संख्या में सहजयोगी हैं। यह पूरे विश्व के लिए आशा किरण है और हम बीहड़ में खोए सभी लोगों को बचा सकते हैं। निःसन्देह। परन्तु ये उत्सव आदि मनाने के पश्चात् आसन पर बैठकर हमें देखना चाहिए कि क्या हो रहा है, और आप हैरान होंगे कि ध्यान अवस्था में जो उपलब्धियाँ आपने प्राप्त की हैं वे सब आपके सम्मुख प्रकट हो जाएंगी। सभी कुछ जो आपने प्राप्त किया है और सारी परेशानियाँ और चिन्ताएं दूर हो जाएंगी। आप सब लोगों के साथ यह घटित होना चाहिए और आप सबसे मैं प्रार्थना करती हूँ कि स्वयं को समझने की ये विशेष शक्ति प्राप्त करें। मेरी आशा पूर्ण हो चुकी है। **आप सब लोगों को यहाँ बैठे देखकर**

मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है। इसी प्रकार जब आप अन्य लोगों की कुण्डलिनी उठाने का प्रयत्न करेंगे तो आपको भी होगा। लोगों को सहजयोग में स्थापित करें। आप आश्चर्य चकित होंगे कि आपके साथ क्या हुआ। अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार देना अत्यन्त आनन्दप्रदायी है। इसके लिए आपको कुछ करना नहीं पड़ता। आपको कोई धन नहीं खर्चना पड़ता ऐसा कुछ नहीं है। आपमें यह शक्ति है जो कि जागृत हो चुकी है। जहाँ भी आप जाएं लोगों की कुण्डलिनी जागृत करके उन्हें आत्मसाक्षात्कार दे दें। कुछ भी नहीं करना है। यह अत्यन्त आनन्ददायी है, इससे आपको बहुत प्रसन्नता होती है।

आज मैं आप सब को इस विशेष शक्ति का आशीर्वाद देती हूँ कि आप लोगों को आत्मसाक्षात्कार दें और उनकी नाभि की देखभाल करें। जो भी हो, यह समझना अत्यन्त आवश्यक है कि आप किसी भी सीमा तक जा सकते हैं। हमें पूरे विश्व को परिवर्तित करना है, पूरे विश्व को बचाना है। यह आपकी जिम्मेदारी है। आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ है अन्य लोगों को नहीं। अतः लोगों में दोष खोजने का प्रयत्न न करें। अपने विषय में सोचें कि आपको आत्मसाक्षात्कार मिल गया है और ये आशा की जाती है कि आप सहजयोग को फैलाएं। हार्दिक धन्यवाद।

परमात्मा आपको धन्य करें।

सत्य साधकों को किस प्रकार जन कार्यक्रम का सन्देश प्राप्त हुआ
रामलीला मैदान, 25 मार्च 2000

सर्वेक्षण (Survey)

(यह विवरण श्री आर. वेंकटेशन के नेतृत्व में कार्य कर रहे नितिन जिन्दल, देवेन्द्र कुमार, सौम्या वेंकटेशन, सुजाता श्रीवास्तव तथा पैंतीस से भी अधिक सहजयोगी कार्यकर्त्ताओं द्वारा प्रस्तुत किया गया।)

परिचय

इस सर्वेक्षण का उद्देश्य यह जानना था कि दिल्ली तथा आस-पास के क्षेत्रों में सत्य-साधकों को जन कार्यक्रम का सन्देश पहुँचाने का मुख्य स्रोत क्या था। साधकों का आयु वर्ग तथा शैक्षिक योग्यता के विषय में जानना भी इसका उद्देश्य था। सर्वेक्षण में किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो इस बात का ध्यान रखते हुए उपस्थित साधकों के विशाल समूह में भिन्न-भिन्न लोगों से इसके विषय में पूछताछ की गई। पैंतीस कार्यकर्त्ताओं ने लगभग नौ सौ तीस जिज्ञासुओं से बातचीत की।

मुख्य परिणाम

जन कार्यक्रम के सूचना स्रोत

1. परिवार तथा मित्र जन कार्यक्रम के मुख्य सूचना स्रोत थे। लगभग दो तिहाई साधकों को कार्यक्रम का सन्देश मित्रों तथा परिवार के सदस्यों से प्राप्त हुआ, एक चौथाई को विज्ञापन बोर्डों तथा दीवारों पर लगे पोस्टरों से सूचना मिली। कार्यक्रम में भाग लेने वाले लोगों के केवल 4% को समाचार पत्रों में छपे विज्ञापनों से सूचना प्राप्त हुई। परिणामों से स्पष्ट है कि दिल्ली सहज योग सामूहिकता गतिशील एवं प्रभावशाली है।

जनकार्यक्रम के सूचना स्रोत

सूचना स्रोत	जिज्ञासुओं का %
समाचार पत्र विज्ञापन	3.6%
पट्टिका (Hoarding)	11.7%
दीवार इश्तहार	13.6%
परिवार	20.7%
मित्र	45.7%
दूरदर्शन विज्ञापन	1.8%
केवल दूरदर्शन	0.6%
बस बोर्ड	0.8%
लेख-पत्रिका/समाचार पत्र	1%
अन्य	0.5%

2. दिल्ली तथा पड़ोसी राज्यों से आए साधकों की भौगोलिक स्थिति

दिल्ली महानगर में सहजयोग चहुँ ओर फैला हुआ है। जनकार्यक्रम का सन्देश फैलाने में पूर्वी **दिल्ली की सामूहिकता अधिक गतिशील रही परन्तु मध्य दिल्ली की सामूहिकता इस कार्य में बहुत पीछे रही।** रामलीला मैदान आए साधकों का लगभग पैंतालीस % पड़ोसी नगरों से आया। कार्यक्रम की सूचना देने के लिए सभाओं

का आयोजन तथा निशुल्क बस सेवा आदि प्रदान करके गाजियाबाद की सामूहिकता सबसे अधिक गतिशील रही, मेरठ और नोएडा इस दिशा में उनसे पीछे रहे और फरीदाबाद और गुडगांव फिसड्डी थे।

तालिका-2

क्षेत्रानुसार जिज्ञासुओं का वर्गीकरण

क्षेत्र	साधकों का %
दक्षिणी दिल्ली	13
उत्तरी दिल्ली	13
पश्चिमी दिल्ली	15
पूर्वी दिल्ली	19
मध्य दिल्ली	7
गाजियाबाद	20
नोएडा	7
गुडगांव	2
फरीदाबाद	1
मेरठ	3

3. साधकों का शैक्षिक स्तर

सहजयोग में दिलचस्पी शैक्षिक स्तर से ऊपर की चीज है। उपस्थित जिज्ञासुओं में से लगभग 43% की शैक्षिक योग्यता दसवीं कक्षा तक की न थी। इतना बड़ा प्रतिशत योगभूमि भारत की सांस्कृतिक संपन्नता की ओर संकेत करता है।

तालिका 3

साधकों का शैक्षिक स्तर

साधकों का शैक्षिक स्तर	साधकों का %
हाई स्कूल स्तर की शैक्षिक योग्यता	57%
हाई स्कूल स्तर से नीचे परन्तु पढ़े लिखे	34%
अनपढ़	9%

4. जिज्ञासुओं की आयु के अनुसार वर्गीकरण

यह सत्य कि उपस्थित जिज्ञासुओं में से दो तिहाई लोग बीस से चालीस वर्ष की आयु के थे, प्रमाणित करता है कि भारत योग-भूमि है। सर्वेक्षण उस कहावत को असत्य साबित करता है कि सत्य साधना केवल वृद्ध लोगों का ही कार्य है।

तालिका-4

आयु समूह	जिज्ञासुओं का %
15 से 20 साल	6%
21 से 30 साल	32%
31 से 40 साल	28%
41 से 50 साल	22%
50 से अधिक आयु वाले	12%

जन कार्यक्रम रामलीला मैदान

25 मार्च 2000

(विवरण)

"दिल्ली की सभी सड़कें रामलीला मैदान पहुँच रही थीं"। 25 मार्च 2000, दिल्ली के रामलीला मैदान में जन कार्यक्रम दिवस को ये कहना अतिश्योक्ति न होती। पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और मध्य दिल्ली के भिन्न भागों के अतिरिक्त पड़ोसी राज्यों के नगरों-मेरठ, गुडगांव, फरीदाबाद, गाजियाबाद से आई हुई अनुबंधित बसों की कतार रामलीला मैदान की ओर बढ़ रही थी। चालीस से साठ हजार के बीच मानव समुद्र, कार्यक्रम आरम्भ होने के नियत समय से पूर्व मैदान पर पहुँच चुका था। सैंकड़ों विज्ञापन बोर्डों, हजारों खम्भों पर लगे इश्तहारों और दीवारों पर लगे असंख्य पोस्टरों ने जनता को कार्यक्रम का सन्देश दिया था। इसका अन्दाजा अपनी कारें खड़ी करने के प्रयत्न में लगी कारों की कतार से लगाया जा सकता था। लगभग पचास % साधक मेरठ, नोएडा, गाजियाबाद, गुडगांव, फरीदाबाद, हरिद्वार आदि नगरों से आए थे और बाकी के दिल्ली महानगर के क्षेत्रों से (विस्तृत विवरण के लिए सर्वेक्षण विवरण देखें)। सभी जातियों तथा समूहों के सत्य-साधक श्री माताजी के दर्शन के लिए वहाँ एकत्र हुए और सभी आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करने के लिए अत्यन्त आतुर थे। श्री माताजी जब स्थल पर पहुँचीं तो साधकों का विशाल जन समूह उनके स्वागत के लिए खड़ा हो गया। दिल्ली राज्य की मुख्यमन्त्री, जो कि वहाँ उपस्थित थी, ने उन्हें गुलदस्ता भेंट किया। मंत्रमुग्ध अवस्था में जिज्ञासुओं ने श्री माताजी को सुना। **श्री माताजी ने बताया कि आत्मज्ञान का मार्ग प्राप्त कर लेना सुगम है। इसके लिए न तो तपस्या की जरूरत है न त्याग की। आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति की शुद्ध इच्छा उसकी एकमात्र शर्त है।** अत्यन्त खेदपूर्वक श्री माताजी ने कहा कि किस प्रकार कुगुरु सत्यसाधकों को भटका रहे हैं। उन्होंने बताया कि सहजयोग तुरन्त साधक के अन्तस को छू लेता है। इस कथन को सिद्ध करने के लिए उन्होंने रूस के तलियाती क्षेत्र के माफिया प्रमुख का उदाहरण देते हुए बताया कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् उसने दिल्ली प्याज भेजने की आज्ञा मांगी क्योंकि उन दिनों दिल्ली में प्याज बहुत महंगे थे। अर्थशास्त्र की स्वीकृत धारणा है कि उद्यमी सदैव समाज में विद्यमान होते हैं। निजी उद्यमों का लक्ष्य शुद्ध लाभ होता है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति द्वारा भी निःसन्देह व्यक्ति को आध्यात्मिक लाभ प्राप्त हो जाता है, स्थितियाँ चाहे जो भी रही हों। व्यक्ति का अन्तर्परिवर्तन हो जाता है।

और तब वह महान क्षण आ पहुँचा! जिज्ञासुओं ने अपने दोनों हाथ परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी की ओर फैला कर पहली बार अद्वितीय सत्य (चैतन्य-लहरियाँ) का अनुभव किया।

श्री गणेश पूजन - 1987 - पुण्यनगरी

निराकार में जो ब्रह्म है, वह ही साकार में साक्षात् श्रीगणेश हैं। अभी तक उसकी गहनता पर बहुत कम विचार किया गया और उसके विषय में जो कुछ भी बताया गया वह सबने मान्य कर लिया, किन्तु उसका विवरण, विश्लेषण ही नहीं पाया था। उसकी वजह यह है कि उस वक्त आपके जैसे सहजयोगी नहीं थे, जो चैतन्य से प्लावित है, जो चैतन्य को जानते हैं और जिनकी सूझ-बूझ सर्व-सामान्य जनता से बहुत ऊँची है। सूझ और बूझ का मतलब कभी-कभी लोग यह सोचते हैं कि जो तर्क और बुद्धि से समझा जाता है या जो संस्कारों से अपने अन्दर अंकित होता है, वह ही सब कुछ सूझ-बूझ होती है, ऐसी बात नहीं है। सूझ-बूझ जो आत्मा की प्रेरणा से, आत्मा के ज्ञान से मनुष्य में एक अद्वितीय ऐसा नया आयाम बना देती है, उसी को सूझ-बूझ कहते हैं। वह सूझ-बूझ देने वाला, लोग कहते हैं, श्रीगणेश हैं। सो कैसे? यह सूझ-बूझ हमें श्रीगणेश किस तरह देते हैं? यह सहजयोगी बहुत आसानी से समझ सकते हैं, क्योंकि जिस वक्त आप "पार" हो जाते हैं, आपके अन्दर से चैतन्य की लहरियाँ बहने लग जाती हैं, तब आप केवल एक मात्र सत्य को ही जानते हैं। ॲब्सल्यूट (Absolute) को जानते हैं। यह श्रीगणेश की माया है। श्रीगणेश ही चैतन्यमय हो करके आपके अंदर से बहते हैं और वही साकार हो करके इस चैतन्य को बहाते हैं। जिस वक्त आप किसी भी वस्तु, प्राणीमात्र या मनुष्य के चैतन्य को जानना चाहते हैं तब आप जो उसकी ओर हाथ बढ़ाते हैं, तत्क्षण आप जान सकते हैं कि इस वस्तु में क्या दोष है, क्या गुण है या यह वस्तु स्वयंभू है या नहीं, इसका पूर्ण ज्ञान आपको हो सकता है, अगर आपकी वह स्थिति हो जाये। इस ज्ञान को देने वाले, इस सूझ-बूझ को देने वाले श्रीगणेश हैं। क्योंकि वह ही चैतन्य बनके हमारे अंदर से बहते हैं और जब वह चैतन्य बनकर हमारे अन्दर से बहते हैं तो उनको जो कुछ भी जानना है वह हम भी जान सकते हैं। वह हमारे ही नसनसों में जाना जा सकता है। हम भी पहचान सकते हैं कि यह चैतन्य द्वारा ज्ञात होने वाली जो कुछ भी बातें हैं वह बिल्कुल सही हैं, (Absolute) हैं। उनमें द्वैत नहीं है, उनमें कोई संशोधन करने वाली बात नहीं, उसमें कोई बड़ी समझदारी रख करके आपस में उसमें वार्तालाप करके किसी समझौते पर पहुँचने की बात नहीं है, जो है सो यही है और इसके अलावा नहीं है।

जब यह गणेश हमारे अन्दर जागृत होते हैं, तब ही हमारे अन्दर से यह शक्ति बहना शुरू हो जाती है।

अब आप कहेंगे कि "माँ कुंडलिनी तो उसकी माँ है और गणेश नीचे बैठे हुए हैं तो यह किस प्रकार घटित होता है?" सात चक्रों में से श्रीगणेश चैतन्य बहाकर अपना अस्तित्व दिखाते हैं कि हम हैं। अब हर जगह जहाँ-जहाँ गणेश हैं-जैसे आपने यहाँ सुना होगा कि तरह-तरह के

गणेश हैं। किसी का नाम है उंब-या गणपति, किसी का नाम कुछ और गणपति है। काम के अनुसार, उसके कर्मों के अनुसार, कार्य के अनुसार उसके गणपति हैं। उसी प्रकार हरेक चक्रों में जो श्रीगणेश बैठे हुए हैं वह गणेश उस स्थान के उस चक्र के अनुसार कार्यान्वित होते हैं। जैसे की समझ लीजिए, नाभि चक्र में श्रीगणेश का क्या स्थान है? तो नाभि चक्र में श्रीगणेश शेष के मुँह से बहते हैं। "शेष-नाग" जो की हमारे श्री विष्णु की शय्या हैं। उसके अन्दर से वह उसकी फुत्कार के साथ बहते हैं और इस वक्त उसकी फुत्कार शुरु हो जाती है। चैतन्य की तो आप देखते हैं कि आपके पेट के हिस्से में एक तरह का स्पंदन सा मालूम होने लग जाता है और यह जो स्पंदन आपको मालूम हो जाता है, इसी को लोग 'परावाणी' कहते हैं। इस परावाणी के आगे चल के दूसरी वाणियों के नाम हैं। लेकिन परावाणी जो है स्पंदन वही श्रीगणेशजी की कृपा है। सो हम सहजयोगियों के लिए गणेशजी बहुत ही महत्वपूर्ण आराध्य हैं। गणेशजी के कहे बगैर, उनकी इजाजत के बगैर कुण्डलिनी उठने वाली नहीं है। इस मामले में कुण्डलिनी अपने बेटे की बात सुनती है। ऐसे तो माँ की बात बेटा हर मामले में सुनता है और आप जानते हैं कि श्रीगणेश तो पूरी तरह से अपनी माँ को समर्पित हैं। वह तो अपने पिता को भी नहीं जानते, लेकिन यह जो कुण्डलिनी है-यह श्रीगणेशजी की बात सुनती है। जिस वक्त में उसका उत्थान हो, क्योंकि मनुष्य के बारे में जो ज्ञान है वह श्रीगणेश को है। श्रीगणेश ही उनको बताते हैं कि वह मनुष्य जागरण के योग्य नहीं है। जिनमें वह भोलापन, सादगी नहीं है, उसमें वह प्रेम नहीं है, तथा जिसने बहुत दुष्ट काम किये हैं उसके लिए कुण्डलिनी जागृत करना ठीक नहीं। तो कुण्डलिनी माँ वहीं बैठी रहती है, और अगर किसी तरह से बिचारी को बड़ा प्रेम चढ़ ही आया और वह चढ़ गयी, ऊपर तक आ भी गयी तो भी फिर उसे घसीट के नीचे, फिर कुण्डलिनी धड़ाक से नीचे गिर जाती है। तो श्रीगणेश का कार्य अत्यन्त अचूक और अत्यन्त महत्वपूर्ण है और क्योंकि वह एक मात्र सत्य को ही जानते हैं वह असत्य पर चलने नहीं देते। इसीलिए उसके हाथ में एक फर्स भी है।

अब जो लोग गणेश तत्व को पहचानना चाहते हैं, और मन से उतारना चाहते हैं, और गणेश तत्व में समा जाते हैं, सिर्फ गणेश की ही भूमिका इस मूलाधार चक्र पर है उसी में जम जाते हैं। माने ऐसे लोग अपने को बड़े सन्यासी, ब्रह्मचारी आदि-आदि बना करके रहते हैं। उनके अन्दर भी एक ऐसी असंतुलन वाली दशा आ जाती है कि जहाँ गणेश एक तरह से सो जाते हैं। "एकांगी" गणेश को आप जानते हैं कि इसके सात स्वरूप हैं और वह सात स्वरूप में न उतरने के कारण एक ही स्वरूप में बैठ जाते हैं। एक ही गणपति अगर पूना में रहें तो यहाँ तो कुछ आल्हाद और उल्लास ही नहीं आयेगा। लोगों को मजा ही नहीं आयेगा, तो उनके तो सात प्रकार हैं उन्हीं सात गणपतियों को आपको जानना चाहिए और जब तक वह आपके अन्दर जागृत नहीं होंगे तो आप एक अजीब तरह की अपने लिए और दूसरों के लिए समस्या बन जाएंगे। अब जो लोग बहुत ज्यादा गणपति की सेवा करते रहे हैं और गणपति को ही मानते रहे हैं और ब्रह्मचर्य में लीन हैं और विवाह भी नहीं किया और किसी स्त्री की ओर देखा भी नहीं

आदि-आदि प्रकार के हैं-वह सीधे आपके पिंगला नाड़ी पर चढ़ते हैं। पिंगला नाड़ी पर चढ़ने से गणेश जी एक तरह से छूट जाते हैं। कार्तिकेय का रूप आ जाता है। पिंगला नाड़ी पर चलने से ऐसे लोग बड़े क्रोधी हो जाते हैं। श्रीगणेश सौम्य स्वरूप हैं। अत्यन्त सौम्य हैं। उनमें सौम्यता ही उनका मूल धर्म है। कोई चीज ज्यादा भड़क जाती है तो उसको ठंडा करने के लिए श्रीगणेश का उपयोग करते हैं। उनका टैम्परेचर (tempt.) -2.72° है। कोई चीज ज्यादा गर्म हो जाए वहाँ श्रीगणेश रख लीजिए वह चीज ठंडी हो जाएगी। किसी आदमी की तबियत ज्यादा बिगड़ जाए तो उसे श्रीगणेश के हवाले कर दीजिए तो उसका बुखार उतर जाएगा। कोई अगर बड़ा क्रोध कर रहा हो तो श्रीगणेश दिखा दीजिए, वह ठंडा हो जाएगा, लेकिन राईट साईड से वह चढ़ने लग जाते हैं तो यही नाभि-चक्र में जो शेषनाग हैं उनकी फुफकार गर्म हो जाती है और ऐसे लोग गर्म हो जाते हैं और गर्मी के कारण उनके अन्दर जो भी गर्मी की तकलीफें तो होती हैं, पर सबसे ज्यादा यह चीज है कि उनमें बड़ा क्रोध आता हे लेकिन श्रीगणेश के जितने गण हैं वह अत्यन्त ठंडे लोग हैं और वह ठंडे दिमाग से ही काम करते हैं।

अमेरिका में पता नहीं कि उसे अपनी ऐसी किसी धारणा से, या किसी कारण हो सकता है कि मनन से या परमात्मा की कृपा से एक वहाँ चीज बनाई है, जिसे स्मार्क कहते हैं। छोटे-छोटे गण जैसे बनाए हुए हैं, बिल्कुल वह गण हैं और उनकी सब हरकतें, तरीके, उनका सब कुछ व्यवहार गणों जैसा है और अब यह जिसने भी सोचकर बनाया हो, या जिसके भी दिमाग में बात आ गयी होगी, हो सकता है वह तो रियलाईज्ड (realised) सोल हो और उनके सब कपड़े नीले रंग के होते हैं। एकदम शुद्ध ऐसा नीला रंग वह पहनते हैं, और उनके साथ में सफेद रंग। उसकी बाकी चीजें-हाथ, पैर सफेद रंग के। उसमें बहुत ही खूबी की बात यह है कि वह हमेशा सत्कर्मों में लगे रहते हैं, और शांत चित्त हैं। अगर श्रीगणेश के गण शांत चित्त नहीं हो तो संसार सारा ही विध्वंस हो जाए। जितनी भी अपने यहाँ आजकल विध्वंसक शक्तियाँ चल रही हैं उनको रोकने वाले जो हैं वह श्रीगणेश के गण हैं। कहीं भी आप देख लीजिए जहाँ युद्ध होता है, उसको खत्म करने का काम जो है वह श्रीगणेश के गण जाकर करते हैं।

अब मैं आपसे बात कह रही हूँ, इसका मतलब यह नहीं है कि आप पूरी तरह से उसको मान ही लीजिए। लेकिन है बात यही। अब आप अगर गण स्वरूप हैं, तो आप में शान्त चित्त होना बहुत जरूरी है। आप में क्रोध है तो आप गणेश के विरोध में जा रहे हैं। सिर्फ गणेश को अधिकार है कि अपना पर्स चलाए, क्योंकि वे स्वयं ज्ञान की मूर्ति हैं और स्वयं इस सूझ-बूझ की स्रोत हैं, लेकिन मानव को अधिकार नहीं है कि वह अपने क्रोध के बल जाए। क्रोध के लिए हमेशा आदमी जब क्रोध करता है, तो वह अपने लिए ही बुरा होता है क्योंकि नुकसान उसको ही होता है। बाद में वह पश्चाताप भी कर सकता है, अगर उसमें इतना संवेदनशील मानव हो तो। पर न हो संवेदनशील तो वह यह कहता है कि मैं इसलिए नाराज हुआ, जैसे श्रीगणेश कहते हे। कि मैंने इस लिए युद्ध किया कि लोग माँ के खिलाफ बोल रहे थे, ये हुआ वो हुआ और मैं माँ की सेवा में हूँ। माँ को मैं रक्षण करता हूँ, मैं माँ को प्रेम करता हूँ। सबसे बड़ा रक्षण माँ का

है, "आपसी प्रेम"। जो गणों ने किया वह करना चाहिए। गणों में इतना आपसी प्रेम है, इतनी उनमें आपस में पहचान है कि जिस वक्त बारह साल का बच्चा होता है, तब अपने इस सेंटर हार्ट का जो चक्र है अनहत, बारह साल तक वहां के अँन्टीबॉडीज, जो हृदय-चक्र के चारों तरफ फिरती रहती है और अगर बाहरी शक्तियाँ वार करती हैं और यह जितने भी अँन्टीबॉडीज हैं वह चारों तरफ अपने शरीर में फैलती है, और चारों तरफ शरीर में फैल करके अगर कोई भी आपके शरीर को आघात हो, या आपके शरीर पर कोई भी बौछार आ रहा हो, या कोई भी परकीय सत्ता आप पर बू बढ़ा रही है, जो कि परमात्मा से अछूती है उसका वह सामना करती है, उससे झगड़ती है और शांत चित्त है। उस परकीय सत्ता को जानने की शक्ति ही उन गणों में रहती है, नहीं तो आप आपस में लड़ बैठे तो उसका क्या अर्थ है? अगर गण आपस में लड़ बैठे तो ऐसा गणों का समुच्चय जिस बॉडी में होगा उसका क्या हाल होगा? जो गण सब एक ही कार्य के लिये नियुक्त हुए हैं, वह अगर आपस में लड़ाई करने लग जायें तो इससे ऐसी तो कोई लड़ाई हो नहीं सकती। अगर समझ लीजिए हम लड़ रहे हैं अंग्रेजों के साथ और आपस में अंग्रेजों को छोड़ के आपस में मारना-पीटना शुरू कर दें तो अंग्रेज कहेंगे अच्छा हुआ, मरो। उन्होंने यही किया कि आपस में लड़ो मरो वही हम आज भी कर रहे हैं। अपने देश में पूरे समय यही चलता है कि इसको पीटो, उसको पीटो, उनको मारो, इनको मारो-यह सब चीज आती कहाँ से है? आती है उसी क्रोध से, और यह क्रोध आता है आपसी घर्षण से, आपसी घर्षण जब होता है तब आता है। यह नहीं खोजते हैं कि हम सब गण हैं और एक ही कार्य के लिए उद्धत हैं, और इसका कोई मतलब ही नहीं बनता है कि हम आपस में लड़ रहे है।। वैसे गण होने से अच्छा कोई गण ही न हो। लेकिन गण आने से अगर लड़ाई हो जाये तो ऐसे गण का क्या फायदा? और उस पर क्यों उसका भी बौद्धिक उत्तर मिल जाता है। वह कि हमने इसलिये किया, उसलिये किया, इस सब चीज को, जो भी सहजयोगी है उसका कार्य जो है वह बड़ा क्षण-विक्षण हो जाता है। अब इसके अनेक तरीके होते हैं कि बम्बई वाले ऐसे है तो दिल्ली वाले वैसे हैं, तो फलाने ऐसे हैं, तो ढिकाने ऐसे हैं। मैं सुन-सुन करके, मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि जब सबकी माँग एक ही है तो कौन दिल्ली वाले और कौन बम्बई वाले? और इस तरह की जब तक "एकता" आपके अन्दर नहीं आयेगी तब तक हम लोग सहजयोगी नहीं हैं। यह एकता आने के लिए पहले अन्दर देखना है क्या हमारे अन्दर किसी के प्रति जेलसी (jealousy) है? आप दूसरों का मजाक उड़ाना नहीं जानते हैं? जो अपने अन्दर यह बना लिया है, यह विचार या यह अहंकार या जो इस तरह की चीजें जो कि आपके लिये शोभनीय नहीं हैं, उनके सहारे आप दूसरों पर बिगड़ पड़ते हैं जो कि आपके अपने हैं, जो आपही के हाथ हैं। यही हाथ इससे लड़ें तो उसे क्या कहा जाता।

सूझ-बूझ का मतलब है प्रेम। और यह प्रेम हमारे अन्दर जागृत करने वाले हैं श्रीगणेश। श्रीगणेश प्रेमस्वरूप हैं। उन्होंने हमें प्रेम करना सिखाया। अब छोटी-छोटी बातों के लिये हम अपने बारे में बहुत सोचते हैं कि हमें यह चीज अच्छी लगी, उसे वह चीज अच्छी लगी। फिर आप सहजयोगी नहीं है। अगर आपको हर आदमी

को अलग-अलग चीज अच्छी लगती है तो आप सहजयोगी कैसे? सारे सहजयोगियों को एक ही चीज अच्छी लगती है, और अगर सारे सहजयोगियों को नहीं साहब, मुझे तो यही रंग अच्छा लगा, किसी ने कहा वह रंग अच्छा लगा, किसी ने कहा वह रंग अच्छा लगा, किसी ने कहा वह रंग अच्छा लगा, तो फिर वह सहजयोगी नहीं है, पर रंगों पर वैचित्र्य होना जरूरी है क्योंकि उससे सौन्दर्य बनता है। यह तो ठीक है कि सौन्दर्य होना चाहिए, लेकिन वह सौन्दर्य जो भी है वह पूरी तरह से एकाग्र होना चाहिए। इन्टिग्रेटेड होना चाहिए। जिसमें डिसइंटिग्रेशन गर है उसमें एकाग्रता नहीं है, तो उसने समझना चाहिए आप सहजयोगी नहीं हैं।

अब जो लंदन में इन लोगों ने हमारे लिये एक मकान बनाया है। "शुडिकैम्प" जहाँ सफाई हुई। बहुत बड़ा मकान है, उसको ठीक-ठाक किया, सब सहजयोगियों ने। कोई बाहर से आदमी नहीं, क्योंकि वह हमारा कोई प्राईवेट घर नहीं था। मैंने कहा, ठीक है, जिसे बनाना है बनाओ, हमारे नाम से बनायेंगे-क्या आश्चर्य की बात यह है कि उसमें करने से सबमें आपस में बड़ा प्रेम सा आ गया है। बड़ा भाईचारा, सब समझ गये कहाँ क्या करना है, क्योंकि इसमें यह था कि हमेशा मिल करके काम करना, इतनी एकता, इतना प्यार उनके अन्दर आ गया। आपस में इतनी पहचान आ गयी और जिसको हम "एकसूत्रता" कहते हैं। (Collectivity) उनके अंदर जागृत हो गयी और पहले वह सब लड़ते रहते थे आपस में। मैं तंग आ गयी थी और यहाँ उल्टी हालत, यहाँ अगर एक काम किसी को बता दें तब उसमें सत्रह फाटे फूटेंगे।

श्रीगणेशजी को अगर आपने अपने अन्दर जागृत कर लिया होगा और आप गण स्थिति में हैं तो जान लेना चाहिए कि आप सब एक सूत्र में बंधे हुए हैं। जिस वक्त में यह ॲन्टीबॉडिज लड़ती है, शरीर में आने वाली किसी भी पेशियों के साथ लड़ती है। किसी भी परकीय सत्ता से लड़ती है। समझ लीजिए कि जो आज यह हाथ में एण्टीबॉडिज है वह अगर कम पड़ गयीं तो फौरन दूसरी जगह से दौड़ के आ जायेंगे। पर ऐसा नहीं होता सहजयोगियों में। इसीलिए सहजयोग अभी तक एक सूत्र नहीं है। इसलिये अभी तक सहजयोग (पूरी तरह से) स्थापित नहीं हुआ है। आज देखते हैं कि श्रीगणेशजी की स्थापना से, इस घट की स्थापना होती है कि नहीं। उसको होना है। अनेक पूजाएं करी हैं। सब कुछ हुआ पर अब भी जो सहजयोग सही माने एकसूत्र होना है हो नहीं पाया। जब तक वह पूरी तरह से नहीं बनेगा तब तक आप लोग इस गलतफहमी में न रहें कि आप सहजयोगी हैं।

अब जैसे कि हमने कहा कि यह लीडर आपका है, तो सब अपने-अपने लगाते हैं कि हम लीडर हैं, हम लीडर हैं। हमें माता जी ने कहा कि लीडर हो जाओ। अरे भाई, मैंने तो एक को कहा, सबके सामने कह दिया कि यह आदमी लीडर है। और उसके कहने के मुताबिक आपको चलना ही पड़ेगा, नहीं तो एकसूत्रता नहीं आने वाली। अगर आप उसके कहने के मुताबिक नहीं चलेंगे तो कभी भी एकसूत्रता नहीं आयेगी। फिर क्रोध आयेगा, झगड़ा होगा, आप सहजयोग से ढल जायेंगे। ऐसे बहुत से लोग हैं जो सहजयोग से निकाले गये। क्योंकि उनको क्रोध आने लगा, आपस में झगड़े होने लगे, मारामारी होने लगी। चलो छोड़ो हटा लो इसे। तब जब एक आदमी को लीडर बना दिया है तब आपके जितने भी

सेन्टर बनाएं वही लीडर है, उसी को मानना चाहिए वह जो कहेगा वह मानना ही पड़ेगा।

इस क्रोध की वजह से आदमी दिमागी जमा-खर्च कर देता है। वह यह है कि उसको सब चक्र मालूम है, उसको कुण्डलिनी मालूम है, वह किताबें लिख सकता है, बोल सकता है, भाषण दे सकता है, लेकिन हृदय में सहजयोग नहीं आया। वही एक सर्वसाधारण आदमी होता है, हृदय से उसने सहजयोग जान लिया बस, मेरे काम का तो यही आदमी है, बेकार बाकी के सब जाओ। यह तो शब्द जाल का कितने बार वर्णन आदि शंकराचार्य ने किया है कि अरे भाई शब्द जाल में मत फंसो, और हीन लो लेव्हल पे लोग उतर आते हैं बुद्धि के कारण। आप देख रहे हैं हिटलर, उसने बुद्धि लड़ाई। बुद्धि के बूते पर यह चीज ठीक समझता हूँ। मैं इसे करूंगा ही। ऐसी जिसने जिद पकड़ ली वह पता नहीं किस लेवल (level) पर हो।

बहुत से लोग क्रोधी थे (सहजयोग में) वह भी एकदम ठंडे होकर के बढ़िया हो गये। आज सबसे बड़ी जरूरत अपने देश को, सारे विश्व को है ऐसे लोगों की जो ठंडे दिमाग के हों। चिढ़ने वाले, बिगड़ने वाले, गुस्सा करने वाले ऐसे लोगों को चाहिए कि समुद्र में जाके बैठे रहें और आपके खुद की सफाई करके फिर आयें।

शांत चित्त की जरूरत आज अपने संसार में है। जिसको देखो वह बंदूक लेके मार रहा है। अमेरिका में अब मैं गयी थी, रास्ते में बता रहे थे कि पिछले हफ्ते में यहाँ पर ग्यारह आदमियों की मृत्यु हो गयी। मैंने कहा कि कैसे हो गया यह? कहने लगे कि जो देखो वह बंदूक उठा के मार देता है, उनके पास बंदूकें हैं। मैंने कहा, क्यों मारा? "बस रास्ता नहीं दिया गाड़ी ने मार डाला।" जैसे कोई यह इन्सान को वह खुद ही बनाते हैं। किसी को अधिकार नहीं है किसी को दुखाने का, उसको हृदय में कोई कठिनाई की बात कहने का - सिवाय परमात्मा के।

इस क्रोध के बारे में श्रीकृष्ण ने बहुत ही ज्यादा कहा है कि क्रोध को छोड़ो, क्रोध को छोड़ो। आप उनके लिये जान दे दीजिए, प्यार नहीं आएगा। कितना भी प्यार कर लीजिए, प्यार नहीं आयेगा। क्रोध चढ़ जाता है। हो सकता है उनमें क्रोध माँ-बाप से आया हो, हो सकता है वह समाज से आया हो, हो सकता है खाने-पीने से आया हो, चाहे जिससे भी आया हो, क्रोध आपका दुश्मन है और सहजयोग का महान बड़ा दुश्मन। इस क्रोध को आपको छोड़ना पड़ेगा, अगर आज श्रीगणेशजी की पूजा करनी है पहले निश्चय हो कि मैं क्रोध को किसी तरह छोड़ दूँगा। क्रोध करना, किसी से बैर करना, किसी के साथ इस तरह दुष्ट शब्द व्यवहार करना सहजयोगियों को बिल्कुल ही उचित नहीं है।

श्रीगणेशजी ने भी इसी तरह कार्य किया। उन्होनें जो अपने सेनापति बनाए हैं, उस सेनापति को कोई नहीं कहेगा कि "तुम क्यों सेनापति बने हो।"

यह जो अपनी सेना है, यह प्यार की, प्रेम की और शांति की सेना है। शांति से हमें रहना है। एक बंधन में आप लोग लोगों को जीत सकते हैं। एक प्रार्थना से आप लोगों को ठिकाने लगा सकते हैं। तो क्रोध की क्या जरूरत है? इसका मतलब आपका सहजयोग पर विश्वास ही नहीं, अभी भी अपने पुराने तरीके लेकर चलते हैं। और क्रोधी आदमी जो होता है उसे भड़कने की इतनी आदत रहती है कि उससे दुनिया डरती है, नैच्युरली आपने कहीं देखा है

कि किसी का स्टैचु बना दिया है, "यह बड़ा क्रोधी था, इसीलिए इसका स्टैचु बनाया गया है।"

क्रोध से मनुष्य का सारा सौष्ठव, उसकी जितनी भी महानता, उसका बड़प्पन सब डूब जाता है।

अपने अलंकार हैं शांति, अपने अलंकार हैं नम्रता। नम्रता हो, कोई भी काम में जो आदमी नम्र होता है वही कामयाब होता है, और यह जो अभी तक आपने इतनी आततायी प्रवृत्ति जो देखी है Aggressive कि दूसरों पर आप हावी हो जाओ, सरों पर चढ़ जाओ-ये करिये इससे मनुष्य कभी भी आपसे श्रद्धापूर्वक नहीं हो सकता। आज अगर डरपोक लोग आपके नीचे आ जाएंगे, एक ग्रुप बन जाएगा यह सहजयोगियों का। बाकी वह भी थोड़े दिन में "भागों रे भैय्या" करके भाग जाएंगे। कौन मुफ्त मार खाने को आयेगा? तो किसी से भी दुष्ट व्यवहार करना बहुत गलत है।

दूसरी बात सहजयोग में हमें समझनी चाहिए कि "रिश्तेदारी"। जैसी अपनी बहुएँ हैं अपनी लड़कियाँ हैं, अपनी माँ है, आप सबके प्रति नम्रता रखनी चाहिए। नम्रता मनुष्य का सबसे बड़ा सुन्दर सौजन्यशील ऐसा अलंकार है। इसी से शोभित होना है। जो मनुष्य नम्रतापूर्वक होता है, उसे लोग कहते हैं कि वह राजा है, और नहीं तो भिखारियों जैसी गालियाँ देने वाला, हमेशा चिल्लाने वाला, पिटने वाला उस आदमी को कौन मानेगा? और बहुत से लोगों के मन में प्रेम भी होता है, लेकिन वह भी बात करने में उस प्रेम को कभी भी व्यक्त नहीं कर पाते।

नम्रता होनी चाहिए, प्रेम होना चाहिए और उसका व्यवहार होना चाहिए। श्रीगणेशजी का ही उदाहरण लीजिए कि वह एक चूहे पर बैठे हुए हैं। अब चूहे महाराज तो हर दफा इधर से उधर भागते रहते हैं। एक पाँव पर इतना बड़ा शरीर अपना उन्होंने कैसे तोल लिया है, और खुद की एक सर्वसाधारण सवारी कर ली। लोग तो पता नहीं क्या-क्या दिखाने के लिये हाथी, घोड़े क्या-क्या रखते हैं।

(श्रीगणेशजी के) नम्रता की हद है। क्या चाहिए गणेश को? बस, एक चूहा दे दिया बस काफी है। चूहे के साथ ही मैं मेरी माँ के प्रति प्रदक्षणा कर लूँगा और दुनिया को जीत लूँगा। कितना शुद्ध हृदय, कितना प्रेम से प्लावित है यह। अपनी प्रेम की शक्ति से उन्होंने यह जाना कि सबसे बड़ी चीज, बात है कि अपनी माँ को प्रदक्षणा करना चाहिए। और दूसरी चीज उनको पूजा में ऐसी चीज है कि बिल्कुल ही जिनके दाम कम। जिसे हम केवड़ा कहते हैं वह फूल सबसे सस्ता होता है, और दूसरा तृण यहाँ पर उसे "दुर्वा" कहते हैं। दुर्वा कहीं भी उगता है, गरीब से गरीब आदमी को भी दुर्वा मिल जाएगा और रईस से रईस आदमी को भी दुर्वा मिल जाएगा। रईस को जमीन पर आना पड़ेगा और दुर्वा को ढूंढना पड़ेगा और रियासत जो है तबियत की। श्रीगणेशजी खाते भी क्या हैं? सिर्फ उन्हें मोदक दे दीजिए, बस और कुछ नहीं। यह रियासत है, बड़प्पन है, एक राजाशाही उनका मामला है। एक चूहे पर चल दिए तो भी सारी दुनिया उनकी वन्दना करती है।

श्रीगणेश छोटे बच्चे जैसे सबको खूब प्यार करते हैं। अब आपको भी रोज सोचना चाहिए कि अगर हम गण हैं तो हमने कितनों को खुश किया? यह जो आपके अन्दर आल्हाद और यह जो आपके अन्दर आनन्द आता है वह

सब गणों के ही वजह से आता है क्योंकि गण ही तो आपके Vibrations हाथ से बह रहे हैं। आकाश से आप पा रहे हैं, लेकिन आपके हाथों से बह रहे हैं। जहाँ भी जाते हैं आपके व्हायब्रेशन्स खिलते हैं और जो सब चीजों को शुद्ध करते हैं। शुद्ध करने का मतलब ही है कि आपने वहां श्रीगणेशजी को शुद्ध कर दिया। शुद्धि से सहजयोग जानना कोई काम का नहीं, हृदय से जानना चाहिए। जब आप हृदय से जानते हैं तो सारा विश्व अपने हृदय में समाया हुआ नजर आता है।

तो आज श्रीगणेशजी की पूजा इस विशेष धरती पर इस पुण्यनगरी में हो रही है, तो यह पुण्य लगाने के लिए, जो पुण्यवान लोग मिलते हैं अत्यन्त नम्र होते हैं। पुण्यवान की पहचान है "नम्र"। बाहर से नहीं, जैसे बिजनेसवाले होते हैं, या कोई वोट लेने आये तो बहुत नम्रता से आये सामान्यत:, वैसा नहीं होता है। अंदरूनी नम्रता, एक तरह से एक नम्र भाव है, वही चाहिए हमारे अन्दर। और लोगों को कहना चाहिए "कितने नम्र हैं"। और किसी-किसी मामले में जैसे की बहुत से गुरु घंटाल लोग हैं। उनको कुछ भी मालूम नहीं। सहजयोग नहीं मालूम, व्हायब्रेशन्स नहीं मालूम; कुछ भी नहीं मालूम। कुछ भूत भी हैं, कुछ राक्षस भी हैं। वह अपने को बड़े गुरू समझते हैं।

और सहजयोग के मामले में तो हमारे सहजयोगी बहुत ही नम्र हैं। जहाँ नहीं होना है। माने अपने बहन से भी नहीं बताएंगे कि सहजयोग क्या चीज है, कि उसमें शरम आती है सहजयोग बताने पे उनको, अपने भाई से भी नहीं बताएंगे। एक साहब मुझे मिले, मैंने कहा-"वह तो बड़े भारी सहजयोगी हैं, आपके भाई।" अच्छा? मुझे तो पता ही नहीं वह सहजयोगी है।"...उसका गर्व नहीं है, जो श्रीगणेशजी में वह गर्व है। वह गर्व है उसके अन्दर इसीलिए वह सोचते हैं कि माँ का पुत्र हूँ। वह गर्व हमारे अन्दर नहीं आया। हम अपने सगे भाई से भी नहीं बताएंगे कि सहजयोग क्या है। मेरी बात तो बाद में बताना, पर "सहजयोग है भाई, आओ सहजयोग में कहाँ जा रहे हैं?" जो आया उसे पहले सहजयोगी बनाओ।

इधर-उधर के बेकार के लोग जो हैं; वह अपने को "हम इसके हाथ का पानी नहीं पियेंगे, हम फलाने, हम ढिगाने, हम फलाना व्रत करते हैं।"

हमने तो (सहजयोगी ने) सारा धर्म ही अपने अन्दर जागृत कर लिया। हमारे अन्दर से तो धर्म बह रहा है। हमारे अन्दर से तो चैतन्य बह रहा है। हम स्वयं चैतन्यमय हो गये हैं। उनके बारे में तो हम बहुत नम्र हैं कि शरमाते हैं, सिवाय मेरे। सब लोग शरमाते हैं, मैं लेकिन सबको सुनाती हूँ। किसी को छोड़ा नहीं, और इसीलिये आप सबने कहना है कि जहाँ नम्रता नहीं चाहिए, जहाँ उस चीज का गर्व चाहिए- जैसे कि मनुष्य है, उसको अभिमान है यह मेरा घर है, मेरी जमीन है, मेरे बच्चे हैं...और देशाभिमान नहीं हो तो ऐसा मनुष्य किस काम का? उसी प्रकार जिसको अभिमान है, हरेक चीज का कि "मेरे से ऐसा किया, उसने ऐसा क्यों किया, उसको मैं ठिकाने लगा दूंगा। वह अपने को क्या समझता है?" और जिस वक्त सहजयोग की बात आती तब तो शरमाने लगे, और जब कोई आ भी जाए; सहजयोग में तो उसे दूषण लगाना कि "तेरे में यह भूत है"। मतलब वही जो अपने अन्दर बात है स्वभाव में कि हर आदमी को ठिकाने लगाना, उस पर कब्जा करना, उसे आते

ही कह देना कि तेरे में भूत है, तेरे में राक्षस है, तू खराब है, तू ऐसा है, तू वैसा है। अगर मैं ऐसा कर देती तो यहाँ एक भी इन्सान बैठा होता क्या?

तो जो श्रीगणेशजी का कार्य है उसके बराबर हम लोग कार्य कर रहे हैं। इधर नजर करे कि पहले तो जो आता है उससे प्रेम से बात करें, उसे मिठाई दें, उसे प्यार की बात कहें, उससे आपके चरित्र का-आपके नम्रता का असर हो पायेगा। नहीं तो ऐसे भी लोग देखें हैं जिनको किसी सहजयोगी ने पार कर दिया, पार होने के बाद वह जो पार हुआ, वह मुझे बताता है कि माँ जिसने मुझे पार किया वह इतना क्रोधी आदमी है मेरे समझ में नहीं आता है, यह सहजयोग कैसा है, उसको उसके प्रति से श्रद्धा उतर गयी।

अगर यह बात है तो क्यों इस दुष्ट क्रोध को रखना, जिसके कारण कोई भी हमें पसंद नहीं करता। सब हमारे दुश्मन हो जाते हैं, तो ऐसे महा दुश्मन (क्रोध) को घर में रखने से फायदा क्या?

श्रीगणेशजी की जो प्रवृत्ति ठंडक पहुँचाती है। ठंडक सबको ठंडा होना है। सौम्य, बहुत सौम्य जैसे "बुध", बुध का जो ग्रह है उसको माना जाता है कि वह बहुत ही सौम्य है, और उसको भी "बुध" माना जाता है, बुध माने ऐसे की जाना हुआ। जिसने एक बार जान लिया। चन्द्रमा को हम लोग कहते हैं कि चन्द्रमा आत्मा की राज है क्योंकि वह सौम्य है।

नम्रता-यह लक्षण है एक सहजयोगी का। जो लोग नम्र नहीं होंगे, और क्रोधी से क्रोधी होते जायेंगे वह फेंके जायेंगे। यह तो आप देखते हैं कि कितनों को फेंक दिया बाहर और मुख्य कारण उनका "क्रोध" है। जितने भी बार बताने पर भी लोग इसको नहीं समझते कि हमारे अन्दर जो "क्रोध", जो हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है, उसको निकाल करके फेंक देना चाहिए। श्रीगणेशजी के आशीर्वाद से ही यह होगा। उनके पूजा में आप सबको शांत स्वरूप हो करके श्रीगणेशजी की पूजा करनी चाहिए कि वह हमारे अन्दर भी शांति दे। इस उथल-पुथल में आज के इस कलियुग में हमें बहुत शांत होना है।

जब तक पाना था आपने पा लिया, अब देने का समय आया है, अब देना चाहिए।

आप सबको अनन्त आशीर्वाद